RNI No. UPHIN/2000/3766 ISSN No. 2581-3528 ₹ : 20

केशव संवाद

(फरवरी 2024)

नारीशक्ति का बढ़ता वर्चस्व

पंचांग फरवरी-2024

फरवरी - 2024 | विक्रम संवत 2080 | माघ - फाल्गुन

रवि SUN		4 (15) ४ माघ कृष्ण 9 तिथि : नवमी नक्षत्र : विशाखा 7.09 am 6.11 pm	11 (22) ११ माघ शुक्ल 2 तिथि : द्वितीया नक्षत्र : शतभिषा 7.06 am 6.16 pm	18 (29) १८ माघ शुक्ल 9 तिथि : नवमी नक्षत्र : रोहिणी 7.01 am 6.20 pm	25 (6) २५ फाल्गुन कृष्ण 1 तिथि : प्रतिपदा नक्षत्र : पूर्व फाल्गुनी 6.56 am 6.23 pm
सोम MON		5 (16) ५ माघ कृष्ण 10 तिथि : दशमी नक्षत्र : अनुराधा 7.09 am 6.12 pm	12 (23) १२ माघ शुक्ल 3 तिथि : तृतीया नक्षत्र : पूर्वभाद्रपदा 7.05 am 6.16 pm	19 (30) १९ माघ शुक्ल 10 तिथि : दशमी नक्षत्र : मृगशीर्षा 7.00 am 6.20 pm	26 (7) २६ फाल्गुन कृष्ण 2 तिथि : द्वितीया नक्षत्र : उत्तर फाल्गुनी 6.55 am 6.24 pm
मंगल TUE		6 (17) ६ माघ कृष्ण 11 तिथि : एकादशी नक्षत्र : ज्येष्ठा 7.08 am 6.12 pm	13 (24) १३ माघ शुक्ल 4 तिथि : चतुर्थी नक्षत्र : उत्तर भाद्रपदा 7.04 am 6.17 pm	20 (1) २० माघ शुक्ल 11 तिथि : एकादशी नक्षत्र : आर्द्रा 7.00 am 6.21 pm	27 (8) २७ फाल्गुन कृष्ण 3 तिथि : तृतीया नक्षत्र : हस्त 6.54 am 6.24 pm
बुध WED		7 (18) ७ माघ कृष्ण 12 तिथि : द्वादशी नक्षत्र : पूर्वाषाढ़ा 7.08 am 6.13 pm	14 (25) १४ माघ शुक्ल 5 तिथि : पंचमी नक्षत्र : रेवती 7.04 am 6.17 pm	21 (2) २१ माघ शुक्ल 12 तिथि : द्वादशी नक्षत्र : पुनर्वसु 6.59 am 6.21 pm	28 (9) २८ फाल्गुन कृष्ण 4 तिथि : चतुर्थी नक्षत्र : हस्त 6.53 am 6.25 pm
गुरु THU	1 (12) १ माघ कृष्ण 6 तिथि : षष्ठी नक्षत्र : चित्रा 7.11 am 6.09 pm	8 (19) ८ माघ कृष्ण 13 तिथि : त्रयोदशी नक्षत्र : उत्तराषाढ़ा 7.07 am 6.14 pm	15 (26) १५ माघ शुक्ल 6 तिथि : षष्ठी नक्षत्र : अश्विनी 7.03 am 6.18 pm	22 (3) २२ माघ शुक्ल 13 तिथि : त्रयोदशी नक्षत्र : पुष्य 6.58 am 6.22 pm	29 (10) २९ फाल्गुन कृष्ण 5 तिथि : पंचमी नक्षत्र : चित्रा 6.52 am 6.25 pm
शुक्र FRI	2 (13) २ माघ कृष्ण 7 तिथि : सप्तमी नक्षत्र : स्वाति 7.1 am 5.10 pm	9 (20) ९ माघ कृष्ण 14 तिथि : चतुर्दशी नक्षत्र : श्रवण 7.07 am 6.14 pm	16 (27) १६ माघ शुक्ल 7 तिथि : सप्तमी नक्षत्र : भरणी 7.02 am 6.19 pm	23 (4) २३ माघ शुक्ल 14 तिथि : चतुर्दशी नक्षत्र : आश्लेषा 6.57 am 6.22 pm	मुहूर्त दिन 4, 6, 7, 8, 12, 13, 17, 25, 26 & 29
शनि SAT	3 (14) ३ माघ कृष्ण 8 तिथि : अष्टमी नक्षत्र : विशाखा 7.10 am 6.11 pm	10 (21) १० माघ कृष्ण अमावस्या तिथि : प्रतिपदा नक्षत्र : धनिष्ठा 7.06 am 6.15 pm	17 (28) १७ माघ शुक्ल 8 तिथि : अष्टमी नक्षत्र : कृत्तिका 7.02 am 6.19 pm	24 (5) २४ माघ शुक्ल पूर्णिमा तिथि : पूर्णिमा नक्षत्र : मघा 6.57 am 6.23 pm	

व्रत दिन

- अमावस्या
- पूर्णिमा
- एकादशी
- षष्ठी
- चतुर्दशी
- शिवरात्रि
- प्रदोष व्रत
- संकष्टी चतुर्थी व्रत
- दुर्गाष्टमी
- चतुर्थी
- संक्रान्ति

- राष्ट्रीय तिथि
- शुक्ल पक्ष
- कृष्ण पक्ष
- छुट्टियां

छुट्टियां

फरवरी 14
वसन्त पञ्चमी

विछुड़ो

आरम्भ 04/02/2024
01:04 AM
समाप्त 06/02/2024
07:35 AM

पंचक

आरम्भ 10/02/2024
10:02 AM
समाप्त 14/02/2024
10:43 AM

केशव संवाद

RNI No. UPHIN/2000/3766

ISSN No. 2581-3528

फरवरी, 2024

वर्ष : 24 अंक : 02

संपादक
कृपाशंकर

सह संपादक
डॉ. प्रदीप कुमार

कार्यकारी संपादक
डॉ. नीलम कुमारी

समन्वयक संपादक
पल्लवी सिंह

पृष्ठ संयोजन
वीरेंद्र पोखरियाल

संपादकीय कार्यालय
प्रेरणा शोध संस्थान न्यास
सी-56/20 सेक्टर-62, नोएडा -201301
फोन न. 0120 4565851, 2400335
ईमेल : keshavsamvad@gmail.com
वेबसाइट : www.prernasamvad.in

स्वामी पंकज कुमार की ओर से मुद्रक/प्रकाशक रमन चावला द्वारा चन्द्र प्रभु ऑफसेट प्रिंटिंग वर्क प्रा.लि. नोएडा से मुद्रित तथा केशव भवन 105 आर्यनगर सूरजकुंड रोड मेरठ से प्रकाशित

इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। संपादक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का निपटारा मेरठ की सीमा में आने वाली सक्षम अदालतों/फोरम में मान्य होगा। संपादक

विषय सूची

श्रीरामलला की प्राण प्रतिष्ठा : स्वर्णिम पुनरुत्थान	-पदम सिंह.....05
राम मन्दिर : सनातन के सवंर्द्धन का प्रतीक	- सचिन तिवारी.....06
सनातन का सांस्कृतिक पुनरुत्थान	- अथर्व दयाल शर्मा....07
हर अंचल और समाज को जोड़ा श्रीराम ने	- रमेश शर्मा.....08
मिथिला के पाहुन राम	- अशोक कुमार झा....10
गणतंत्र दिवस में दिखा नारीशक्ति का बढ़ता वर्चस्व	- रोशनी अहिरवार.....12
भारत की कोकिलासरोजिनी नायडू	- वृष्टि त्यागी.....15
पर्यटन की दृष्टि से अयोध्या	- डॉ. वेद प्रकाश.....16
संस्कृति की वाहक है मातृभाषा	- डॉ. नीलम कुमारी...18
वसंत पंचमी : प्रकृति परिवर्तन और संकल्प का पर्व	- डॉ. कामिनी चौहान..20
ज्ञानवापी : विश्वेश्वर महादेव का मंदिर है	- श्रेयांशी.....22
परीक्षा में वरदान है सकारात्मक दृष्टिकोण	- डॉ. शिवा शर्मा.....26
परीक्षा पे चर्चालिखने की आदत बनाएं - नरेंद्र मोदी	-डॉ. रामशंकर.....28

पाठकगण पत्रिका के बारे में अपने सुझाव एवं प्रतिक्रिया,'संपादक के नाम पत्र' शीर्षक से ई-मेल (keshavsamvad@gmail.com) के माध्यम से भेज सकते हैं। चुने हुए पत्रों को पत्रिका के अगले अंक में प्रकाशित किया जायेगा।

ISSN No. 2581-3528

संपादकीय.....

केशव संवाद पत्रिका का फरवरी माह का अंक दो ऐसे ऐतिहासिक क्षण का साक्षी बना, जो इतिहास के पन्नों में सुनहरे अक्षरों से अनंत काल के लिए अंकित किया हो गया। प्रथम, तो राम मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा का विहंगम दृश्य और दूसरा गणतंत्र दिवस परेड में महिलाओं का रोमांचकारी दृश्य। यह मन को आलोकित, गौरवान्वित और सम्मान से अभिभूत करने वाला था।

हम बहुत भाग्यशाली हैं, जिसने अपनी आंखों के सामने प्रभु राम के मंदिर की भव्यता को साकार होते हुए देखा है। देवभूमि भारत ने मानव इतिहास के सबसे कठोर सहस्र वर्ष का संघर्ष देखा है, परंतु श्री राम की कृपा से न्याय हुआ और आज अयोध्या नगरी अपनी पूरी आभा के साथ हम सभी को अपनी ओर आकर्षित कर रही है। भारत एक बार पुन: अपने ऐतिहासिक, सांस्कृतिक गौरव व आध्यात्मिक राष्ट्र निर्माण के सपने को साकार करता नजर आ रहा है। राम मंदिर निर्माण व रामलला की दिव्य व भव्य प्राण प्रतिष्ठा प्रत्येक भारतीय को उसकी सभ्यता और संस्कृति पर गौरव तथा उसकी सुरक्षा करने की प्रेरणा प्रदान रहा है। वर्तमान समय सनातन के पुनरुत्थान का है, क्योंकि सनातन के मार्ग पर चलकर ही समाज व राष्ट्र की आधारभूत समस्याओं का निराकरण किया जा सकता है। भारत की इस विकास यात्रा से ऐसा प्रतीत हो रहा है कि भारत अपने विश्व गुरु बनने की राह पर अग्रसर है। 75वें गणतंत्र दिवस समारोह में महिला शक्ति का प्रदर्शन न केवल महिला सशक्तिकरण का प्रमाण है, बल्कि आधी आबादी के सम्मान की भी पुनर्स्थापना भी है। वैसे भी जब पूरा राष्ट्र समानता और सम्मान के अधिकार के साथ प्रगति पथ पर बढ़ेगा तभी विकसित भारत का सपना साकार होगा। समय साक्षी रहा है जब-जब भारत में सनातन संस्कृति की जड़ें गहरी हुईं, तब-तब देश में बंधुत्व, समानता और उन्नति की डोर भी मजबूत हुई है। इसलिए नये और विकसित भारत के लक्ष्य में अयोध्या में रामलला की प्राण प्रतिष्ठा और गणतंत्र दिवस के परेड में महिला शक्ति का ऐतिहासिक प्रदर्शन ये दोनों बिंदु आने वाले उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभ संकेत हैं।

संपादक

ISSN No. 2581-3528

श्रीरामलला की प्राण प्रतिष्ठा : स्वर्णिम पुनरुत्थान

पदम सिंह
क्षेत्र प्रचार प्रमुख
पश्चिमी उप्र. एवं उत्तराखंड, रा. स्व. संघ

ग्रन्थों का अध्ययन करते समय प्रसंग मिलता है कि लक्ष्मण के द्वारा मारे गये मेघनाद की दक्षिण भुजा सती सुलोचना के समीप जाकर गिरी और पतिव्रता का आदेश पाकर उस भुजा ने सारा वृत्तान्त लिखकर बता दिया। सुलोचना ने निश्चय किया कि अब मुझे सती हो जाना चाहिए, किंतु पति का शव तो राम-दल में पड़ा है, तो फिर वह कैसे सती होती? जब अपने श्वसुर रावण से उसने अपना अभिप्राय कहकर पति का शव मंगाने के लिए कहा, तब रावण ने उत्तर दिया- देवी! तुम स्वतः ही राम-दल में जाकर अपने पति का शव प्राप्त करो। जिस समाज में बाल ब्रह्मचारी श्रीहनुमान, परम जितेन्द्रिय श्री लक्ष्मण तथा एक पत्नी व्रती श्रीराम उपस्थित हैं, उस समाज में तुम्हें जाने से डरना नहीं चाहिए। मुझे विश्वास है कि इन स्तुत्य महापुरुषों के द्वारा तुम निराश भी नहीं लौटाई जाओगी। जब रावण सुलोचना से ये बातें कह रहा था, उस समय कुछ मंत्री भी उसके पास बैठे थे। उन लोगों ने कहा कि जिनकी पत्नी को आपने बंदिनी बनाकर अशोक वाटिका में रखा है, उनके पास आपकी बहू का जाना कहां तक उचित है? यदि वह गयी तो क्या सुरक्षित वापस लौट सकेंगी? रावण ने उत्तर दिया कि मंत्रियों! लगता है, तुम्हारी बुद्धि नष्ट हो गयी है। अरे, दूसरे की स्त्री को बंदिनी बनाकर रखना, यह तो रावण का काम है, राम का नहीं। प्रसंग छोटा है लेकिन, संदेश बहुत बड़ा है। धन्य हैं श्री राम और धन्य है श्रीराम का चरित्र बल। श्रीराम का ऐसा चरित्र बल, जिसका विश्वास और प्रशंसा शत्रु भी करते थकता नहीं। आज वर्तमान में इसी श्री राम चरित्र की हमें आवश्यकता है। एक कवि ने कहा है "गिरि से गिरि पर जो गिरे, मरे एक ही बार। जो चरित्र गिरि तें गिरे बिगड़े जन्म हजार"।

वर्तमान पीढ़ी बहुत भाग्यवान है, जिसने अपनी आंखों से अयोध्याजी में प्रभु श्रीराम के मंदिर की भव्यता को साकार होते देखा है। पीढ़ियां लग गयीं, जीवन लग गए, भक्ति की शक्ति के बीच संघर्ष होता रहा। श्रीराम कृपा से न्याय हुआ और आज अयोध्या अलकापुरी की आभा लिये हम सब को अपनी ओर आकर्षित कर रही है।

युगों से श्रीराम का चरित्र ही हम भारतीयों की प्रेरणा है। एक पुत्र के रूप में, एक पति के रूप में, एक भाई के रूप में, राष्ट्र प्रेम के रूप में, मां शबरी, मां अहिल्या के वात्सल्य के रूप में, निषादराज से मित्रता की आत्मीयता के रूप में, जटायु को पिंड देकर असहाय की सहायता और प्रजा के बीच रहकर न्याय करके एक श्रेष्ठ शासक से लेकर अनेक रूप में श्रीराम का चरित्र हम सबके लिए अनुकरणीय है। करुणा, क्षमा, सत्य, न्याय, सदाचार, साहस, धैर्य, और नेतृत्व यह सभी श्रीराम के गुण हैं। इसलिए श्री राम सबके हैं और सबमें हैं।

श्रीराम का एक गुण ऐसा भी है, जिसकी चर्चा आज के समय में आवश्यक है - वह है, एक श्रेष्ठ संगठनकर्ता के रूप में। लंका विजय के समय श्रीराम ने अपने साथ बंदर-भालुओं को लिया, क्योंकि अच्छे काम के लिए जन सहयोग की आवश्यकता होती है। अकेला व्यक्ति कोई बड़ा काम नहीं कर सकता है। छोटे-छोटे बंदर-भालुओं के सहयोग से समुद्र में पुल बनता चला गया। श्रीराम की मनःस्थिति समरस और सामाजिक थी, तो वहां परिस्थिति भी अच्छी होती चली गयी।

आज श्रीराम चरित्र के गुणगान, अनुसरण और उसे अपने जीवन में उतारने का सही समय है, क्योंकि मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम जन्मस्थली पर बने भव्य मंदिर में प्रभु श्रीरामलला विराजमान हुए। यह प्रसंग केवल प्रभु श्री रामलला के विराजमान होने का नहीं है, बल्कि इससे आगे यह प्रसंग श्रीराम की प्राप्ति और जन्मभूमि की मर्यादा और उसके प्रेम के प्रति भी है। 500 वर्षों के लंबे संघर्ष और लाखों बलिदान के बाद अयोध्या में सनातन संस्कृति की प्रतिष्ठा हो रही है। प्रभु श्रीराम की प्राण प्रतिष्ठा का अवसर भारतीय इतिहास में एक स्वर्णिम दिन के रूप में दर्ज हो गया। यह अवसर भारत सहित विश्वभर में निवास कर रहे करोड़ों भारतवंशियों को अत्यन्त भावुक और आनंद से विभोर करने वाला क्षण रहा।

वर्तमान पीढ़ी बहुत भाग्यवान है, जिसने अपनी आंखों से अयोध्याजी में प्रभु श्रीराम के मंदिर की भव्यता को साकार होते देखा है। पीढ़ियां लग गयीं, जीवन लग गए, भक्ति की शक्ति के बीच संघर्ष होता रहा। श्रीराम कृपा से न्याय हुआ और आज अयोध्या अलकापुरी की आभा लिए हम सब को अपनी ओर आकर्षित कर रही है। हम जाएंगे, परिवार के साथ जाएंगे। मित्रों के साथ जाएंगे। मां सरयू में स्नान करेंगे और प्रभु श्री रामलला के श्रृंगार के दर्शन कर अलकापुरी बनी अयोध्याजी की भूमि पर मस्तक रख भारत माता की वंदना करेंगे।

ISSN No. 2581-3528

राम मन्दिर : सनातन के सवंर्द्धन का प्रतीक

सचिन तिवारी
शोधार्थी

अयोध्या की पवित्र धरा पर राम मन्दिर के निर्माण से भारत की भूमि पर पुन: एक बार त्रेतायुगीन समता, समृद्धि एवं समरसता के मुख्य भाव जागृत हो रहे हैं।

मनुर्भव जनया दैव्य जनम्। अर्थात् मनुष्य बनो और देव प्रज्ञा को जन्म् दो। श्री राम का सम्पूर्ण जीवन वेद की इस पंक्ति को अक्षरशः चरितार्थ करता है। संसार में जिन गुणों एवं आदर्शों द्वारा मनुष्य की पूजा होती है व मनुष्य का जीवन विकसित होता है वे सभी गुण प्रभु राम में दृष्टिगोचर होते हैं। राम मानवता के सर्वोच्च आदर्श हैं। उनके जीवन का प्रत्येक उद्धरण मानव जाति को भक्ति एवं मुक्ति प्रदान करने के साथ-साथ वर्तमान सामाजिक एवं राजनीतिक व्यवस्था के सुचारू परिचालन के लिए भी अनुकरणीय है। प्रभु राम के सम्पूर्ण जीवन चरित्र एवं उनके द्वारा स्थापित महान आदर्शों की पुनर्स्थापना भारत भूमि पर अयोध्या में भगवान राम के दिव्यतम् मन्दिर निर्माण के साथ हो चुकी है। अयोध्या की पवित्र धरा पर राम मन्दिर के निर्माण से भारत की भूमि पर पुनः एक बार त्रेतायुगीन समता, समृद्धि एवं समरसता के मुख्य भाव जागृत हो रहे हैं। जब कभी भी समाज में अनैतिकता और अधर्म ने अपने पांव जमाए तब-तब भारत की इस पवित्र भूमि पर देव आत्माओं ने अवतरित होकर इस सम्पूर्ण धरा का उद्धार करने का कार्य किया। सनातन संस्कृति तथा भारत एवं भारतीयता पर आये प्रत्येक संकट के समय इन्ही देव आत्माओं द्वारा स्थापित आदर्शों ने सम्पूर्ण जनमानस का मार्गदर्शन किया।

महाराज विक्रमादित्य ने जहां मानव जाति के देवतुल्य आचरण हेतु भारत भूमि पर भगवन् स्मारकों का निर्माण कराया वहीं आदि शंकराचार्य ने सनातन को संबल प्रदान करने हेतु सम्पूर्ण भारत में भ्रमण कर चार हिन्दू धर्म पीठों की स्थापना की। भारतीय संस्कृति अपने सनातनी स्वरूप के निर्माण काल से ही असंख्य व्यवधानों के उपरान्त भी अविरल प्रवाहमान एवं जीवंत रही है। सनातन संस्कृति पर जब भी कभी अस्तित्व बोध का संकट आया हमारे ऋषि-मुनियों एवं महान प्रतापी सम्राटों ने हमारा मार्गदर्शन किया। इनके द्वारा स्थापित हिन्दू धर्म के मठ-मन्दिर अपनी बेजोड़ वास्तुकला एवं शिल्पकारी के साथ-साथ आस्था एवं आदर्श के दर्पण स्वरूप भी रहे हैं।

असंख्य बलिदानों एवं संघर्षों के परिणामस्वरूप हुए राम मंदिर का पुनर्निर्माण मात्र किसी भवन के संरचना का निर्माण नहीं, अपितु भारत की संस्कृति एवं सभ्यता के पुनर्स्थापना का द्योतक है। राम मंदिर निर्माण भारतीय सनातन संस्कृति के आधार शब्द वसुधैव कुटुम्बकम् को भी संबल प्रदान कर रहा है। दुनिया के अनेक देश अयोध्या में अपने सांस्कृतिक दूतावासों की स्थापना कर रहे हैं। आज अयोध्या का राम मन्दिर सम्पूर्ण धरा पर भारतीय अध्यात्म की शक्ति का परिचय करा रहा है। नीतिकारों में अग्रणी शुक्राचार्य ने राम को आदर्श राजा बताया है- **न राम सदृशों राजा पृथिव्यां नीतिमानभूत।**

राम तथा रामायण में जीवन के आदर्शभूत और शाश्वत मूल्यों का सलंयन है। वर्तमान भारतीय समाज में फैल रही पारिवारिक विसंगतियों तथा समस्याओं को भी राम चरित्र के अनुसरण से दूर किया जा सकता है। साथ ही राम मन्दिर के द्वारा प्रभु राम के इन चारित्रिक आयामों को भी पुनः समाज में स्थापित किया जा सकता है।

अद्रोहः सर्वभूतेषु कर्मणा मनसा गिरा ।
अनुग्रहश्च दांन च सतां धर्मः सनातनः।।

अर्थात् इस संसार के समस्त प्राणीमात्र से मानसिक रूप से अपने कर्मों द्वारा तथा अपने बोलने के तरीके से कभी भी द्रोह न करना एवं सभी के प्रति दयाभाव रखना तथा दानशीलता यही सज्जन व्यक्तियों द्वारा भारतीय सनातन धर्म का आदर्श अनुपालन है। राम का सम्पूर्ण जीवन चरित्र सनातन संस्कृति की इन पक्तियों के सदृश है। राम ने अपने जीवन चरित्र से इन आदर्शों की स्थापना की।

भारत एक बार पुनः अपने ऐतिहासिक, सांस्कृतिक गौरव एवं आर्यावर्त की प्राचीन सीमाओं तक अपना प्रसार अपनी आध्यात्मिक आकर्षण एवं सशक्त नागरिक एवं राष्ट्र निर्माण के सपने को पूरा करता दिख रहा है। राम मन्दिर प्रत्येक भारतीय को उसके सभ्यता एवं संस्कृति पर अभिमान तथा उसकी सुरक्षा करने की प्रेरणा प्रदान कर रहा है। आज अयोध्या सम्पूर्ण विश्व में नवजागरण का केन्द्र बनकर उभरा है। वर्तमान समय सनातन के पुनरुत्थान का है और सनातन के मार्ग पर ही चलकर समाज एवं राष्ट्र की सभी आधारभूत समस्याओं का निराकरण सम्भव है।

ISSN No. 2581-3528

सनातन का सांस्कृतिक पुनरुत्थान

अथर्व दयाल शर्मा

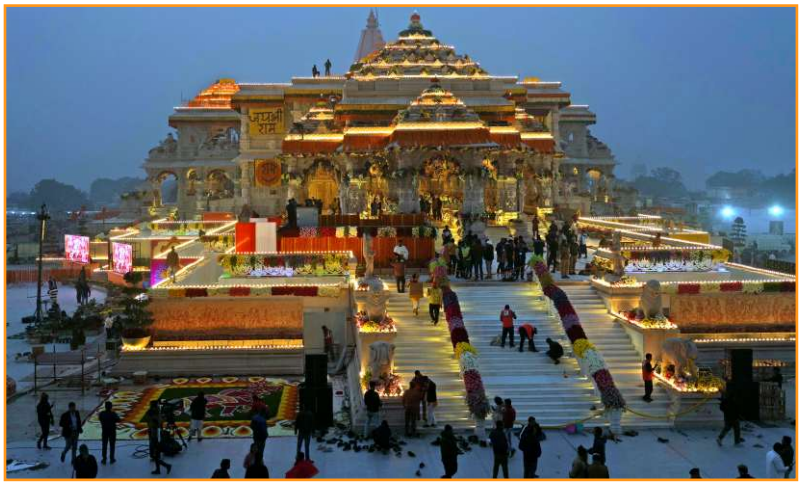

राम मंदिर प्राण-प्रतिष्ठा का विहंगम दृश्य आने वाले सहस्त्र वर्षों का दैवीय उद्घोष है। पराजित राष्ट्र तब तक पराजित नहीं होता जब तक वह अपनी संस्कृति और मूल्यों की रक्षा कर पाता है। इस राष्ट्र को अखंड होने की यात्रा में श्रीराम का आगमन ऊर्जा प्रदान करता है। सांस्कृतिक नवजागरण का शंखनाद करोड़ों भारतीयों के नेत्रों से बहते अश्रु राम मंदिर पुनर्स्थापन को ऐतिहासिक एवं कालजयी है।

22 जनवरी 2024 मृगशिरा नक्षत्र में अयोध्या नगरी में श्रीराम लला की दिव्य प्राण–प्रतिष्ठा विधिपूर्वक संपन्न हुई। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने इस अलौकिक आयोजन को कालचक्र परिवर्तन का श्रीगणेश कहकर संबोधित किया। समस्त भारत भूमि का कण–कण राममय होकर राम ध्वज ओढ़ भगवाधारी हुआ। शिवगर्जना और सुंदर शास्त्रीय नृत्य से अलंकृत यह मंदिर भारत की सनातन सभ्यता के सांस्कृतिक पुनरुत्थान की नींव बनेगा।

देवभूमि भारत ने मानव इतिहास के सबसे कठोर सहस्त्र वर्ष का संघर्ष देखा है। एकता की विविधता और वसुधैव कुटुंबकम् जैसे भाव रखने वाली संस्कृति को मज़हबी कट्टरता ने केवल विध्वंस, भेदभाव और लूट–पाट ही दिया। जहां इस्लामिक आक्रांताओं ने भारत के आस्थास्थलों को ध्वस्त कर दूषित किया तो वहीं ईसाई औपनिवेशिकवाद की तलवार का प्रहार वैचारिक मेधा पर हुआ। मार्तंड, काशी विश्वनाथ, राम जन्म स्थान, सोमनाथ और मथुरा केशवदेव समेत 40,000 हिंदू मंदिरों को तोड़कर मस्जिद में परिवर्तित किया गया। सन् 1947 में स्वतंत्रता तो मिल गई, परन्तु क्या एक घायल राष्ट्र पुनर्गठन और पुनरुत्थान को सज्ज था। कदाचित यह घाव भरे ही नहीं। भारत के शिक्षा संस्थान और गुरु शिष्य परम्परा को प्रतिस्थापित कर अंग्रेज़ी शिक्षा पद्धति ने इतिहास को दूषित करके प्रस्तुत किया।

वीर योद्धाओं और शस्त्रधारी महापुरुषों की परंपरा नपुंसक विचारों और सपेरे के खेल से बदल दी गई। भारत की चेतना भारत के आदर्श रामलला को भी न्यायालय में याचिका देनी पड़ी। सोमनाथ से चला रामरथ 400 वर्ष से न्याय मांग रही अयोध्या नगरी में हिंदू नवचेतना लिए कारसेवा में जुट गया। मस्जिद ध्वस्त तो हो गई, किंतु उसके बाद भी वर्षों स्वयं भगवान को शत कोटि भक्तों की पुकार पांच न्यायाधीशों के हाथ छोड़नी पड़ी। पीढ़ियों से रामनाम रटती आ रही अयोध्या न्यायालय के एकमत निर्णय से झूम उठी।

राम मंदिर प्राण–प्रतिष्ठा का विहंगम दृश्य आने वाले सहस्त्र वर्षों का दैवीय उद्घोष है। पराजित राष्ट्र तब तक पराजित नहीं होता जब तक वह अपनी संस्कृति और मूल्यों की रक्षा कर पाता है। इस राष्ट्र को अखंड होने की यात्रा में श्रीराम का आगमन ऊर्जा प्रदान करता है। सांस्कृतिक नवजागरण का शंखनाद करोड़ों भारतीयों के नेत्रों से बहते अश्रु राम मंदिर पुनर्स्थापन को ऐतिहासिक एवं कालजयी है। यह वर्षों तक सांस्कृतिक पुनरुत्थान के जयघोष का संदेश देता रहेगा। साथ ही भारत के स्व और आत्मगौरव के प्रमाण के रूप में गौरवान्वित करता रहेगा।

ISSN No. 2581-3528

हर अंचल और समाज को जोड़ा श्रीराम ने

रमेश शर्मा
वरिष्ठ पत्रकार

भगवान श्री राम ने वनवास काल और अयोध्या से लंका तक की यात्रा में लगभग प्रत्येक ऋषि आश्रम और समाज से संपर्क किया था। इस तरह भगवान श्रीराम पूरे समाज से स्वयं जुड़े और सबको परस्पर जोड़ने का संकल्प भी दिलाया। क्योंकि जब समाज संगठित रहेगा, सशक्त रहेगा तो आसुरी शक्तियां सभ्य, सुसंस्कृत समाज को कभी कष्ट नहीं पहुंचा सकेंगी।

भगवान श्रीराम का व्यक्तित्व और कृतित्व केवल अयोध्या या लंका विजय तक ही सीमित नहीं है। उनका पूरा जीवन समाज और राष्ट्र निर्माण के लिए समर्पित रहा है। वनवास यात्रा से पहले और राज्याभिषेक के बाद भी वे पूरे भारत को एक सूत्र में बांधने में सतत सक्रिय रहे। उन्होंने उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम तक पूरे भारत को एक सांस्कृतिक स्वरूप प्रदान किया।

भगवान श्रीराम के वनवास काल के विवरण और अयोध्या से लंका तक की यात्रा से हम सभी परिचित हैं। उन्होंने अयोध्या से चित्रकूट और चित्रकूट से लंका तक की यात्रा में लगभग प्रत्येक ऋषि आश्रम और प्रत्येक समाज से संपर्क किया था। उनके बीच रहे, उनकी जीवन शैली समझी और लौटते समय लगभग हर समाज प्रमुख को पुष्पक विमान में अपने साथ अयोध्या लाये। ये सभी उनके राज्याभिषेक आयोजन में अतिथि थे। लेकिन अपने वनवास जीवन से पहले भी उन्होंने दो बार वन यात्रा की थी। पहली बार अध्ययन के लिए महर्षि वशिष्ठ के आश्रम में गये। इस आश्रम के दो स्थान माने जाते हैं एक आज के जिला बाराबंकी के अंतर्गत और दूसरा उत्तराखंड में। तब ये दोनों क्षेत्र वन और पर्वतीय अंचल थे। दूसरा महर्षि विश्वामित्र के साथ अयोध्या से दंडकारण्य तक की यात्रा की थी। और आसुरी शक्तियों का दमन कर सांस्कृतिक चेतना का वातावरण बनाया था। ये आसुरी शक्तियां सांस्कृतिक मूल्यों और मानवीय संवेदनाओं का हरण कर रहीं थीं। इनके कारण समाज और राष्ट्र दोनों में विघटन बढ़ने लगा था। इससे चिंतित महर्षि विश्वामित्र ने रामजी से सहायता मांगी और दंडकारण्य तक पूरा भारत एक सूत्र में बंधा। दंडकारण्य लगभग आज के छत्तीसगढ़ से ओडिशा, आन्ध्र प्रदेश तथा महाराष्ट्र की सीमाओं तक विस्तृत था।

वनवास काल में भगवान श्रीराम दंडकारण्य से आगे बढ़े और श्रीलंका तक गये। श्रीलंका तक जाना माता सीता की खोज मान सकते हैं, लेकिन लौटते समय वे प्रत्येक स्थान पर गये, सभी समाज से मिले और सभी समाज प्रमुखों को अपने साथ अयोध्या लेकर आये। रावण वध विजयदशमी को हो गया था, किंतु रामजी को अयोध्या लौटने में अनुमानतः सत्रह दिन लगे। रावण सहित उसके सभी परिजनों के अंतिम संस्कार में एक दिन, दूसरे दिन विभीषण का राज्याभिषेक हुआ और उसी दिन विभीषण सीता माता को लेकर भगवान रामजी के पास आये। यदि भेंट एवं विदाई के लिए एक दिन और मान लें, तो भी ये कुल तीन दिन होते हैं। पुष्पक विमान की गति

ISSN No. 2581-3528

पवन से भी तेज थी। भगवान श्रीराम कुछ घंटों में ही लंका से अयोध्या आ सकते थे। पुष्पक विमान में बैठकर भगवान श्रीराम सीधे अयोध्या नहीं आये। अपितु वे उन सभी वन्य ग्रामों और ऋषि आश्रमों में गए, जहां अपनी वनवास यात्रा में सीता हरण से पहले गए थे। भगवान श्रीराम सभी समाज से मिले और समाज प्रमुखों को अयोध्या आने का आमंत्रण दिया। वास्तव में इस कार्य में ही उन्हें लगभग सत्रह दिन लगे। लंका से विदा होने से पहले भगवान श्रीराम ने समस्त लंकावासियों को भी अयोध्या आमंत्रित किया था। भगवान श्रीराम पूरे समाज से स्वयं जुड़े और सबको परस्पर जोड़ने का संकल्प भी दिलाया। चूंकि दानवी शक्तियां सदैव समाज के बिखराव का लाभ उठातीं हैं। उनका सामना केवल संगठन शक्ति से ही किया जा सकता है। यदि समाज संगठित होगा, सशक्त रहेगा तो आसुरी शक्तियां सभ्य, सुसंस्कृत समाज को कभी कष्ट नहीं पहुंचा सकेंगी।

अपने राज्याभिषेक के बाद भी भगवान श्रीराम का यह अभियान यथावत रहा। उन्होंने लक्ष्मण, शत्रुघ्न और हनुमान जी को विभिन्न दिशाओं में भेजा और पूरे भारत को एक सूत्र में पिरोया। अपनी रुचि या क्षेत्र विशेष की प्रकृति के अनुरूप जीवन शैली में विविधता एक बात है और सांस्कृतिक विविधता दूसरी बात। भारत प्रकृति की विविधता से भरा देश है। यहां यदि बर्फ से ढका हिमालय है, तो राजस्थान में रेगिस्तान भी है। तीन ओर से समुद्र से घिरी सीमाएं भी हैं। इसके कारण रहन-सहन में भेद है, लेकिन यह केवल बाह्य रूप है। आंतरिक रूप से तो राष्ट्र का सांस्कृतिक स्वरूप एक ही है। इसी सिद्धांत को जीवन में उतारने का काम प्रभु श्रीराम ने किया था। भारतीय संस्कृति समूची वसुंधरा के निवासियों को कुटुम्ब मानती है। संसार का एक-एक प्राणी उसके कुटुम्ब का अंग हैं। सभी समाज वर्ग और क्षेत्र जन परस्पर प्रीति करें, एक दूसरे का पूरक बनें, यह संदेश रामजी की प्रत्येक यात्रा और अभियान में रहा। किसी में कोई भेद न हो, न नगरवासी

में, न ग्रामवासी में और न कोई वन के निवासी में। भगवान श्रीराम ने एक-एक व्यक्ति, वर्ग और क्षेत्र को राजमहल से जोड़ा। उनकी वनवास यात्रा के विवरण से स्पष्ट है कि रामजी ने वनवासियों को तंग करने वाले और उनका शोषण करने वाले संगठित समूहों का अंत किया। आसुरी प्रवृत्तियां वनों में ही

शोधकर्ता डॉ. राम अवतार ने 48 वर्षों तक लगातार भगवान राम से संबद्ध तीर्थों पर शोध किया है। उनकी पुस्तक 'वनवासी राम और लोक संस्कृति' में प्रभु राम के विभिन्न प्रयाणों से संबंधित 290 स्थलों को चिन्हित किया गया है।

सर्वाधिक सक्रिय थीं। जिससे ऋषिगण और वनवासी समाज आक्रांत हुआ। रामजी महर्षि विश्वामित्र के साथ गये हों या अपनी वनवास यात्रा में, हर जगह उन्होंने उन सभी राक्षसों का अंत किया। जिस प्रकार एक ही वृक्ष की शाखाएं अलग-अलग दिशाओं में फैलती हैं, ऐसी ही प्रभु राम की लीलाएं और उसका सारतत्व है। इस तरह विश्व की संपूर्ण मानवता का केन्द्रीभूत बिन्दु एक ही है। रामजी का आचरण इसी भाव का था और यही संदेश उन्होंने समाज को दिया। भारत के एकत्व स्वरूप को आराध्य प्रतीकों से भी समझा जा सकता है। नारायण महासागर में निवास करते हैं और शिव कैलाश पर। अर्थात एक सिरे से दूसरे सिरे तक भारत एक है। यदि संबंधों की व्यापकता को देखें, तो रावण की पत्नी मंदोदरी मध्य प्रदेश के मंदसौर जिले की मानी जाती हैं और राम की मां देवी कौशल्या छत्तीसगढ़ की। श्रीलंका में रावण के अनुज विभीषण की पत्नी सरमा कैकेय प्रदेश की थीं, जहां की राजकुमारी कैकेयी राजा दशरथ की पत्नी थीं। मैसूर में, तमिलनाडु में, बंगाल में, असम में कितनी लोक कथाओं के नायक राम हैं। कितने स्थलों के नामों में राम शब्द आता है। यह सब भगवान राम के व्यक्तित्व की व्यापकता का सूचक है। इसके दो ही कारण हैं एक, तो राम स्वयं वहां गये हों अथवा कोई और उनका संदेश लेकर वहां गया हो। अब राम स्वयं गये हों अथवा कोई संदेश लेकर गया हो उद्देश्य केवल एक है- पूरे भारत राष्ट्र को एक सूत्र में पिरोने का। शोधकर्ता डॉ. राम अवतार ने 48 वर्षों तक लगातार भगवान राम से संबद्ध तीर्थों पर शोध किया है। उनकी पुस्तक "वनवासी राम और लोक संस्कृति" में प्रभु राम के विभिन्न प्रयाणों से संबंधित 290 स्थलों को चिन्हित किया गया है। कुछ स्थानों पर तो शिलालेख भी मिले। इन सभी स्थानों में रामजी की यात्रा के प्रमाण हैं। स्वयं रामजी की अथवा उनका संदेश लेकर गए प्रतिनिधियों की यात्रा का केवल एक ही उद्देश्य शोषित, पीड़ित एवं वंचित वर्ग को राजमहल से जोड़कर उचित सम्मान प्रदान करना था।

ISSN No. 2581-3528

मिथिला के पाहुन राम

अशोक कुमार झा 'अविचल'
प्राचार्य, एल.बी.एस.एम. कॉलेज जमशेदपुर

अयोध्या में रामलला के प्राण प्रतिष्ठा से पूरे राष्ट्र के साथ-साथ मिथिलावासी भी आत्मीयता के साथ धन्य हो गये। क्योंकि राम का आर्दश जीवन समस्त पृथ्वी वासियों के लिए अनुकरणीय है। भक्तों के लिए आराध्य हैं राम, लेकिन मिथिला की स्थिति भिन्न है। मिथिला का परिचय परमात्मा राम, भगवान राम, मर्यादा पुरूषोत्तम राम से अधिक अपने जामाता सियावर राम से है, जो मिथिला के पाहुन हैं।

विश्व की सबसे प्राचीन सभ्यताओं में से एक भारत की सनातन परंपरा है। सनातन परंपरा 22 जनवरी को सांस्कृतिक पर्व के रूप में अनुष्ठित कर दी गयी। इसी के साथ उत्साह, प्रेम, सद्भाव और सामंजस्य के वातावरण का नया अध्याय शुरू हो गया है। इतिहास को अगर देखें, तो यह स्पष्ट परिलक्षित होता है कि सनातन संस्कृति और इसकी परंपराओं पर आक्रान्ताओं द्वारा सर्वाधिक आघात किया गया है। जबकि भारतीय संस्कृति सभी जीवों को समाहित करने वाली संस्कृति है। इस संस्कृति के मूल वेदों का ज्ञान जो समय–समय पर ब्राह्मण ग्रन्थों, उपनिषदों, स्मृतियों एवं पुराणों के माध्यम से व्याख्यायित होता रहा है। अलग–अलग कालखण्डों में विविध मनीषियों में वेद की उद्घोषणा यथा– सांस्कृतिक समन्वय, जैविक चेतना, समतामूलक, प्रकृतिजन्य स्थापना, बंधुत्व, प्रेम, अधिकारों और कर्त्तव्यों की आख्या करते रहे हैं।

सनातन संस्कृति के मूल तत्वों को आम जनों तक व्यावहारिक रूप में उच्चतम आदर्शों के साथ प्रस्तुत करने के उद्देश्य से ही प्रायः मर्यादा पुरूषोत्तम राम का अवतरण हुआ। वह उनके सम्पूर्ण जीवन शैली, तात्विक स्थापनाओं, निर्णय, संयमित पराक्रम, राजनीति, समाजनीति एवं धर्मनीति से स्पष्ट होता है। विश्वभर में प्रचलित 300 से अधिक रामकथाओं में तुलसीदास का रामचरितमानस की सर्वव्यापकता सर्वज्ञात है। राम का सम्पूर्ण आदर्श ही जीवोन्मुख है। समाज और व्यक्तियों के हित में है। व्यक्तिगत सुख के स्थान पर वृहत्तर समाज का कल्याण उनके रामराज्य की परिकल्पना में सर्वापरि है। उनकी पूरी जीवनशैली कर्त्तव्य पालन, व्यक्तिगत सुखों का त्याग, जगतहित में पराक्रम का उपयोग आदि से आवेष्टित है। उन्हीं के आदर्शों का व्यापक प्रभाव है कि सनातन समाज 500 वर्षों तक धैर्यपूर्वक राम की जन्मभूमि पर राम का मंदिर बनाने के लिए संघर्ष करता है। लाखों की संख्या में लोग अपने जीवन की आहुतियां देते हैं। यह भी उस राष्ट्र की सार्वभौमिक सीमा के भीतर जहां 80 से 90 प्रतिशत जनसंख्या उन्हें अपना आराध्य मानती हो। इस धैर्य और सहनशीलता को इस रूप में भी देखा जा सकता है कि राम का पूरा जीवन चरित्र विपरीत परिस्थितियों में धैर्य और सहनशीलता का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करता है।

सभी राम कथाओं के मूल्यांकन के पश्चात् तीन ही ऐसे महत्वपूर्ण प्रस्थान बिन्दु दृष्टिपथ पर मुख्य रूप से आते हैं, जब राम का क्रोध प्रदर्शित होता है और ये सारी स्थितियां अति की स्थितियां है। ऋषि मुनियों पर हो रहे अत्याचारों से वे

ISSN No. 2581-3528

व्यथित होते हैं, कुपित भी होते हैं परन्तु वे धैर्य का परित्याग नहीं करते। परन्तु जब राक्षसों द्वारा मारे गए ऋषि मुनियों के अस्थियों का अंबार वो देखते हैं, तो उनका क्रोध प्रकट हो उठता है और दुष्ट प्रवृत्तिधारक राक्षसों के विनाश का संकल्प लेते हैं। पुनः दूसरा, प्रस्थान बिन्दु समुद्र तट पर आता है, जब उनके उद्देश्यों की पूर्त्ति में समुद्र बाधक बनकर खड़ा होता है और विनय नहीं मानता है। श्री राम का पराक्रम क्रोध के माध्यम से प्रकट होता है और तुलसीदास की पंक्तियां मुखर हो उठती हैं।

विनय न मानत जलधि जड़, गए तीनि दिन बीति।
बोले राम सकोप तब, भय बिनु होहि ना प्रीत।।

वहीं तीसरा, प्रस्थान बिन्दु उत्तरकांड के अन्त मे आता है जब नारी सशक्तिकरण की प्रतीक मां सीता अब और परीक्षा ना देने के संकल्प के साथ भूमि में प्रवेश करती हैं और कुपित होकर राम जी का क्रोध प्रकट होता है और वे पृथ्वी को ही नष्ट करने की बात करते हैं। विश्व भर में राम को अनेक रूपों में जाना और समझा जाता है। सबके राम हैं और सब राम के हैं। तुलसीदास ने लिखा भी है–

जाकी जैसी भावना जैसी,
प्रभु मूरत देखी तिन तैसी।

राम की ससुराल मिथिला में राम को जामाता के रूप में देखा जाता है। यह संबंध राम को मिथिलावासियों के और करीब करता है। इस संबंध में एक अपनापन है, भाव है, निकटता है। मिथिलावासी अपने लोक साहित्य, लोक संस्कृति और लोक अवधारणा में राम की अभ्यर्थना पाहुन के रूप में करते हैं। प्रायः आप सभी विद्वत्तजन इस बात से भिज्ञ हैं कि रघुकुल का गहरा संबंध मिथिला से रहा है। भगवान राम के साथ सीता के विवाह के साथ ही वह प्राचीन संबंध नया स्वरूप और नया कलेवर धारण करता है और मिथिला की लोकगीत की धारा मुखर हो उठती है।

आजु मिथिला नगरिया निहाल सखियां।
चारों दूल्हा मे बड़का कमाल सखियां।।

पाहुन राम के साथ हास्य परिहास ना हो ये भला कैसे हो सकता है और कवि कोकिल विद्यापति के गीतों की काकली से सुभाषित मिथिला की ललनाएं शालीन शब्दों में हास्य परिहास को नया आयाम देते हुए स्वर देती हैं। मिथिला में संस्कारों का बहुत महत्व है। सनातन व्यवहार को अपने जीवंत शैली और संस्कारों को अपना बना लेने वाली मिथिला की ललनाओं द्वारा जन्म, विवाह आदि सोलह संस्कारों के अवसर पर गाए जाने वाले गीतों में पाहुन राम के संबंध में ढेर सारी गीत सम्मिलित हैं। जो

मैथिली में छोटे- बड़े आकार के 12 रामायणों की रचना इसका प्रमाण है। परन्तु यहां का लोक जनमानस राम को अपनी लोक परंपरा में पाहुन के रूप में ही जानता है।

इन संस्कारों के समय अनायास ही लोगों का ध्यान अपने तरफ आर्कषित करते हैं। लोकभाषा के उन्नायक और प्रतिष्ठापक कवि कोकिल विद्यापति के गीत भी इसके साक्षी हैं।

भल हर भल हरि भल तुअ कला।
खन पित बसन खनहिं बघछला।।

इसी क्रम में चन्दा झा के मिथिला भाषा रामायण (मैथिली रामायण) से रामकाव्य परंपरा आगे बढ़ती है और रमेश्वर चरित मिथिला रामायण तथा रामदत्त सिंह द्वारा 5 खण्डों में रचित सीता रामायण आदि के साथ मिथिला के साहित्यिक पटल पर पाहुन राम परमात्मा राम का स्वरूप ग्रहण करते हैं। मैथिली में छोटे– बड़े आकार के 12 रामायणों की रचना इसका प्रमाण है। परन्तु यहां का लोक जनमानस राम को अपनी लोक परंपरा में पाहुन के रूप में ही जानता है। और उसी रूप में उनके गीत भी हैं इसलिए तो अपने पाहुन से वह मिथिला में ही रहने का अनुरोध करते हैं–

ए पहुना एही मिथिले में रहु ना,
जउने सुख बा ससुरारी में,
तउने सुखवा कहूं ना,
ऐ पहुना एही मिथिले में रहु ना।।

मिथिला नगरी अपनी बेटी के साथ खड़ी रहती है। वनवास में सीता के दुखों से दुखी होती है, परन्तु राम के साथ रहने से आश्वस्त भी रहती है। उसे अपनी बेटी का धर्म मानती है। अकेले वनवास भेजे जाने पर मिथिला की लोक चेतना व्यथित भी होती है जो कि स्वभाविक है। विवाह के गीतों में संस्कारों का बड़ा महत्व होता है और सीता के विदाई के समय जब मैथिल ललनाएं करूण स्वर में गा उठती हैं, तो हर हृदय आकुल हो उठता है। नयन नीर प्रवाहित होने लगते हैं। मिथिलावासियों को 500 वर्ष के लंबे संघर्ष के पश्चात् अपने पाहुन राम के अपने भव्य मंदिर में आने पर उसी प्रकार के उत्साह और आनंद की अनुभुति हो रही है जैसे किसी को अपने पुत्री और जामाता के गृह प्रवेश के अवसर पर होता है। इसलिए पांच सौ वर्षों बाद 22 जनवरी को रामलला के विराजमान होने पर पूरे राष्ट्र के साथ–साथ मिथिलावासी भी आत्मीयता के साथ धन्य हो गये। क्योंकि राम तो भारतीय संस्कृति के कण–कण में व्याप्त हैं। उनका आर्दश जीवन समस्त पृथ्वी लोक के लिए अनुकरणीय है। भक्तों के लिए आराध्य हैं राम लेकिन मिथिला की स्थिति भिन्न है। मिथिला का परिचय परमात्मा राम, भगवान राम, मर्यादा पुरूषोत्तम राम से अधिक अपने जामाता सियावर राम से है। जो मिथिला के पाहुन हैं। जिनसे हास–परिहास किया जा सकता है। जिनसे ठिठोली की जा सकती है।

ISSN No. 2581-3528

गणतंत्र दिवस में दिखा नारीशक्ति का बढ़ता वर्चस्व

रोशनी अहिरवार
छात्रा, पत्रकारिता एवं जनसंचार आईआईएमटी
कॉलेज ऑफ मैनेजमेंट, गौतमबुद्ध नगर

75वें गणतंत्र दिवस समारोह में महिला शक्ति का प्रदर्शन एक ऐतिहासिक क्षण रहा। यह न केवल महिलाओं की बढ़ती शक्ति और सशक्तिकरण का प्रतीक है, बल्कि यह भारत के लोकतंत्र में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका को भी दर्शाता है। इस दृश्य ने विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं की भागीदारी को भी दृश्यांकित किया है। इसमें पहली बार दिल्ली पुलिस की महिला जवान, सेना की महिला अधिकारियों और चिकित्सकीय सेवा से जुड़ीं महिला कर्मियों का दस्ता परेड करता नजर आया। 1,500 महिला लोक नृत्य कलाकारों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम में भाग लिया। तथा बीएसएफ, सीआईएसएफ और अन्य अर्धसैनिक बलों की महिला जवानों ने हैरतअंगेज करतब दिखाए। यह पहल महिलाओं के लिए एक सकारात्मक बदलाव है और यह दर्शाता है कि भारत सही दिशा में आगे बढ़ रहा है। यह पहल महिलाओं को सशक्त बनाने और उन्हें समाज में समान अधिकार और अवसर प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। यह क्षण भारत के इतिहास में एक महत्वपूर्ण घटना है और यह आशा की जाती है कि यह महिलाओं के लिए एक बेहतर भविष्य की शुरुआत होगी।

26 जनवरी, 2024 यानी 75 वें गणतंत्र दिवस समारोह में महिला शक्ति का प्रदर्शन एक ऐतिहासिक क्षण रहा। यह न केवल महिलाओं की बढ़ती शक्ति और सशक्तिकरण का प्रतीक है, बल्कि यह भारत के लोकतंत्र में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका का भी दिग्दर्शन है। इस वर्ष, पहली बार गणतंत्र दिवस परेड में सभी महिलाओं का दल शामिल था, जिसमें सेना, वायु सेना, नौसेना और अन्य अर्धसैनिक बलों की महिला कर्मी शामिल थीं। यह क्षण इसलिए भी महत्वपूर्ण था, क्योंकि यह भारत की स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं के योगदान की याद दिलाता है। रानी लक्ष्मीबाई, कल्पना चट्टोपाध्याय, सरोजिनी नायडू और अरुणा आसफ अली जैसी महिलाओं ने देश की स्वतंत्रता के लिए अपना जीवन बलिदान कर दिया। इसके अलावा, यह पहल महिलाओं को प्रेरित करने और उन्हें सशक्त बनाने का एक प्रयास था। यह दर्शाता है कि महिलाएं हर क्षेत्र में सफल हो सकती हैं, चाहे वह सेना हो, विज्ञान हो, या खेल।

यह क्षण भारत के लिए एक महत्वपूर्ण मोड़ था और यह आशा की जाती है कि यह महिलाओं के लिए समानता और न्याय की दिशा में एक बड़ा कदम होगा। यह पहल महिलाओं को प्रेरित करेगी और उन्हें अपने सपनों को पूरा करने के लिए प्रोत्साहित करेगी। यह कार्यक्रम कर्तव्य पथ पर आयोजित सम्पूर्ण कार्यक्रम में 80 फीसदी की भागीदारी के साथ महिला शक्ति का दबदबा रहा। भारतीय बेटियों ने न केवल कार्यक्रम की रौनक बढ़ाई अपितु समारोह के संचालन में भी उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही। कार्यक्रम की शुरुआत 112 महिला कलाकारों के द्वारा शंख और नगाड़ों की मधुर प्रस्तुति के साथ की गई। महिला कलाकारों के पूरे समूह में भारत के विभिन्न राज्यों से सम्मिलित कलाकार शामिल थे। इसमें 20 कलाकार महाराष्ट्र से थे, जिन्होंने अपने ढोल और ताश की लयबद्ध से सबको आकर्षित किया। वहीं तेलंगाना के 16 कलाकारों ने पारंपरिक डप्पू से सांस्कृतिक परिचय दिया। बैंड में बंगाल के ढक और ढोल बजाने वाले 16 निपुण कलाकार भी शामिल थे, इनके आठ कलाकारों ने शंख की ध्वनि से कार्यक्रम में वीर रस का संचार किया।

ISSN No. 2581-3528

केरल के 10 कलाकारों ने पारंपरिक ड्रम चेंडा और कर्नाटक के 30 कलाकारों ने ऊर्जावान ढोलू कुनिथा से कार्यक्रम में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। इसके साथ ही चार–चार कलाकारों द्वारा पारंपरिक वाद्य यंत्र नादस्वरम, तुतारी और झांझ बजाया जा रहा था।

सुरक्षा हो या झांकियां प्रस्तुति नारी शक्ति की उपस्थिति हर स्थान पर रही। गणतंत्र दिवस परेड में पहली बार 144 महिलाओं की सशस्त्र बल चिकित्सा सेवा की महिला टुकड़ी ने मार्च किया। इसका नेतृत्व मेजर सृष्टि खुल्लर के द्वारा किया गया। परेड में भारत की इंडियन कोस्ट गार्ड दस्ते ने भी अपना कौशल दिखाया। इस दस्ते ने समुद्र प्रहरी के रूप में मार्चिंग कर उपस्थिति दर्ज कराई। ऐसा पहली बार था कि सीआईएसएफ के दस्ते की कमान महिलाओं के हाथ में थी। 148 महिलाएं सीआईएसएफ के दस्ते में शामिल रहीं। 75 वर्षों में प्रथम बार दिल्ली पुलिस की महिला दस्ते ने परेड में हिस्सा लिया। इसका नेतृत्व आईपीएस श्वेता सुगाथन ने किया।

बाइक पर चंद्रयान के नजारे ने कार्यक्रम में चार चांद लगा दिये। जिसमें 9 बाइक पर 48 महिलाओं ने अपना संतुलन बनाकर परेड में चंद्रयान प्रदर्शित किया। बाइक शो के दौरान 48 महिलाओं ने अद्भुत संतुलन से लोगों को चकित कर दिया। इस प्रस्तुति को सशस्त्र सीमा बल की पूनम और वंदना सहित अन्य महिलाओं के सहयोग से किया गया। कर्तव्य पथ पर पहली बार आर्मी, नेवी और एयरफोर्स की महिला सैनिकों का संयुक्त मार्चिंग दस्ता देखने को मिला। इसका नेतृत्व इंडियन आर्मी की कैप्टन संध्या ने किया। इनके साथ आर्मी ऑफिसर कैप्टन श्रन्या राव, नेवी ऑफिसर सब–लेफ्टिनेंट अंशु यादव और एयरफोर्स ऑफिसर फ्लाइट लेफ्टिनेंट श्रृष्टि राव शामिल रहीं।

गणतंत्र दिवस के अवसर पर वायु सेना के दस्ते में भारतीय बेटियों का प्रदर्शन अद्वितीय रहा। जिसे देख लोग गौरवान्ति

गणतंत्र दिवस के अवसर पर वायु सेना के दस्ते में भारत की बेटियों का प्रदर्शन अद्वितीय रहा। जिसे देख लोग गौरवान्वित हुए। एयर फोर्स की मार्चिंग दस्ते की अगुवाई स्क्वाड्रन लीडर रश्मि ठाकुर के द्वारा की गई। झांकी में कमांडर का दायित्व फाइटर पायलट लेफ्टिनेंट अनन्या शर्मा और फ्लाइंग ऑफिसर असमा शेख ने संभाला। झांकी में तेजस सुखोई-30 के साथ ट्रांसपोर्ट एयरक्राफ्ट सी-295 देख, लोगों में देश प्रेम की भावना का वेग स्पष्ट रूप से दिखाई दिया।

हुए। एयर फोर्स की मार्चिंग दस्ते की अगुवाई स्क्वाड्रन लीडर रश्मि ठाकुर के द्वारा की गई। झांकी में कमांडर का दायित्व फाइटर पायलट लेफ्टिनेंट अनन्या शर्मा और फ्लाइंग ऑफिसर असमा शेख ने संभाला। झांकी में तेजस सुखोई–30 के साथ ट्रांसपोर्ट एयरक्राफ्ट सी–295 देख, लोगों में देश प्रेम की भावना का वेग स्पष्ट रूप से दिखाई दिया। भारतीय बेटियों ने मिसाइल के पराक्रम के साथ जो शौर्य दिखाया उसे देख दर्शकों में उत्साह की लहर दौड़ गई। मध्यम दूरी की सतह से हवा में मार करने वाली MRSAM मिसाइल को गणतंत्र दिवस में पहली बार शामिल किया गया। इसका नेतृत्व एयर डिफेंस मिसाइल रेजीमेंट की लेफ्टिनेंट सुमेधा तिवारी ने किया। पिनाका का मल्टीपल लॉन्च रॉकेट सिस्टम मिसाइल ने कर्तव्य पथ पर अपनी शक्ति का प्रदर्शन किया। यह पूरी तरह स्वचालित आक्रामक हथियार सिस्टम है। इसमें हर लॉन्च में 12 रॉकेट होते हैं। इसकी रेंज 37.5 किलोमीटर तक है। इसका नेतृत्व करने वाली प्रियंका सेवड़ा सेना की आर्टिलरी ऑफिसर हैं। आर्टिलरी ऑफिसर के परेड में शामिल होने की विशेष बात यह रही कि भारतीय सेना ने पिछले साल अप्रैल से ही आर्टिलरी आर्म में महिला अधिकारियों की भर्ती शुरू की है। और यह पहली बार है कि, महिला आर्टिलरी ऑफिसर गणतंत्र दिवस परेड में शामिल हुई। वायु सेना दस्ते ने कर्तव्य पथ पर अपनी परेड की शुरुआत में सेना की एविएशन कोर के साथ रुद्र फॉर्मेशन के जरिए सलामी दी, सलामी में एक प्रचंड हेलीकॉप्टर और तीन रुद्र हेलीकॉप्टरों ने भारत की वायु सेना की शक्तियों का परिचय दिया।

इस सबके अतिरिक्त परेड में इंडियन नेवी के मार्चिंग दस्ते में पुरुषों के साथ महिला अग्निवीर ने भी भागीदारी की।

ISSN No. 2581-3528

भारतीय जल सेना की झांकी में महिलाओं की सेना में भूमिका और भागीदारी को दर्शाया गया। झांकी का केंद्र आत्मनिर्भरता रहा। झांकी में नारी शक्ति और देश की आत्मनिर्भरता को एक साथ बड़ी ही सुंदर आकृति के रूप में प्रस्तुत किया गया। इसमें स्वदेशी एयरक्राफ्ट कैरियर विक्रांत के शौर्य को प्रदर्शित किया गया। क्षेत्र वीरता का हो या कला का भारतीय बेटियां कहीं किसी से कम नहीं। 1500 नृत्यांगनाओं ने कर्तव्य पथ पर ऐसा नृत्य किया कि भारत के साथ–साथ विदेशों से आए मेहमानों की तालियां भी उनका उत्साह बढ़ाते नजर आईं। नृत्य की विशेषता रही कि देश के विभिन्न राज्यों के प्रचलित लोक नृत्य को प्रस्तुति में शामिल किया गया। जिसमें कुचिपुड़ी, कथक, भरतनाट्यम, मोहिनीअट्टम और बॉलीवुड शैलियों के साथ नृत्य को एक लय और ताल के साथ प्रस्तुत किया गया। 'अनंत सूत्र' के नाम से देश के हर कोने से लाई गई 1900 साड़ियों से कर्तव्य पथ को बेहद खूबसूरती के साथ सजाया गया था। साड़ियों में 150 वर्ष पुरानी एक साड़ी भी शामिल की गई। भारत, संस्कृति संरक्षण के अपने विचार से पूरे विश्व को प्रभावित कर रहा है। ऐसी मनोरम व्यवस्था ने दर्शकों को भारत की संस्कृति से जोड़ा। गणतंत्र दिवस के इस कार्यक्रम में महिलाओं के सम्मान के साथ बुनकर और कलाकारों की कला का ऐसा संयुक्त रूप पहले कभी नहीं देखा गया। विकसित भारत और भारत लोकतंत्र की मातृका के साथ नारीशक्ति गणतंत्र की थीम रही। इसी थीम पर नारी शक्ति का प्रबल प्रदर्शन कर्तव्य पथ पर देखा गया। कैसे भारत की बेटियों ने कार्यक्रम के संचालक कौशल का परिचय पूरे देश को दिया। कर्तव्य पथ पर महिलाओं ने प्रथम अवसर पाते ही इतिहास रच दिया।

निष्कर्ष : पहली बार दिल्ली पुलिस की महिला जवान, सेना की महिला अधिकारियों और चिकित्सकीय सेवा से

विकसित भारत और भारत लोकतंत्र की मातृका के साथ नारीशक्ति गणतंत्र का थीम रही। इसी थीम पर नारी शक्ति का प्रबल प्रदर्शन कर्तव्य पथ पर देखा गया। कैसे भारत की बेटियों ने कार्यक्रम के संचालक कौशल का परिचय पूरे देश को दिया। कर्तव्य पथ पर महिलाओं ने प्रथम अवसर पाते ही इतिहास रच दिया।

जुड़ीं महिला कर्मियों का दस्ता परेड करता नजर आया। इसी तरह सांस्कृतिक कार्यक्रम में पहली बार 1,500 महिला लोक नृत्य कलाकार अपने नृत्य से लोगों को तालियां बजाने पर मजबूर किया। बीएसएफ, सीआईएसफ और अन्य अर्धसैनिक बलों की महिला जवानों ने हैरतअंगेज करतब दिखाएं। इस बार परेड की अगुवाई रक्षा मंत्रालय के दस्ते नहीं बल्कि शंख, नगाड़े, डमरू जैसे प्राचीन वाद्य यंत्रों से लैस सौ महिलाओं का एक दस्ता ने किया। इसके ठीक पीछे देशभर के अलग–अलग हिस्सों से 15 सौ से अधिक नृत्यांगनाओं का एक दल रहा, जो देश की विविधता से सभी को परिचित करा रहा था। गणतंत्र दिवस में महिला शक्ति के परचम से एक सकारात्मक बदलाव दिखाई दे रहा है। यह पहल महिलाओं के लिए एक सकारात्मक बदलाव है और यह दर्शाता है कि भारत सही दिशा में आगे बढ़ रहा है। यह पहल महिलाओं को सशक्त बनाने और उन्हें समाज में समान अधिकार और अवसर प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। यह क्षण भारत के इतिहास में काफी महत्वपूर्ण है और यह आशा की जाती है कि यह महिलाओं के लिए एक बेहतर भविष्य की शुरुआत होगी।

सन्दर्भ सूची :

- गुप्ता, आर. (2023). भारतीय महिलाओं का इतिहासः स्वतंत्रता से वर्तमान तक. पेंगुइन रैंडम हाउस।
- शर्मा, एस. (2024) गणतंत्र दिवस परेड में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी– सशक्तिकरण का प्रतीक?. इंडिया टुडे, 45(5), 24–28।
- सिंह, एम. (2024, 26 जनवरी). गणतंत्र दिवस पर महिला शक्ति का दबदबा, द हिंदू।
- महिला सशक्तिकरण को समर्पित परेड, सेना से लेकर झांकियों में दिखेगी स्त्री शक्ति. दैनिक जागरण (2024, 26 जनवरी) अमर उजाला।
- तिवारी, अभिषेक. गणतंत्र दिवस परेड में दिखा महिला शक्ति और शौर्य का अद्भुत प्रदर्शन– दैनिक जागरण (2024, 26 जनवरी)।

ISSN No. 2581-3528

महिलाओं के लिए आदर्श हैं सरोजिनी नायडू

वृष्टि त्यागी
छात्रा, आईएमएस, गाजियबाद

बहुआयामी व्यक्तित्त्व की धनी सरोजिनी नायडू भारत एवं विश्व भर में महिलाओं के लिए एक आदर्श हैं। उनकी जीवटता, साहस, समर्पण और नेतृत्त्व आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणास्रोत है।

भारत कोकिला (नाइटिंगेल ऑफ इंडिया) नाम से विख्यात सरोजिनी नायडू एक राजनीतिक कार्यकर्ता, नारीवादी, कवयित्री थीं। और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की अध्यक्ष बनने वाली व भारतीय राज्य की राज्यपाल नियुक्त होने वाली पहली भारतीय महिला थीं। भारतीय इतिहास में सरोजिनी नायडू का साहित्य से लेकर स्वत्रतंत्रता संग्राम तक अविस्मरणीय योगदान रहा है। साथ ही उनकी अहम भूमिका रही महिला सशक्तिकरण में, अपने संपूर्ण जीवन में उन्होंने महिलाओं के अधिकारों को बढ़ावा देने के लिए बहुत से कार्य किए और समाज में जागरूकता पैदा करने का प्रयास किया। यही कारण है कि भारत में हर साल 13 फरवरी को सरोजिनी नायडू की जयंती को 'राष्ट्रीय महिला दिवस' के रूप में मनाया जाता है। उनके द्वारा महिलाओं के हित में किए गए प्रयास में निम्नलिखित बिंदु शामिल हैं।

विधवाओं के अधिकार : 1908 में आयोजित भारतीय राष्ट्रीय सामाजिक सम्मेलन के 22वें सत्र में, सरोजिनी नायडू ने विधवाओं के लिए शैक्षिक सुविधाओं, महिला घरों की स्थापना और विधवाओं के पुनर्विवाह में बाधाओं को दूर करने की मांग करते हुए एक प्रस्ताव रखा। यह प्रस्ताव उनके द्वारा उस समय रखा गया जब समाज में ये विषय विवादास्पद माना जाता था।

मत देने का अधिकार : 1917 में, सरोजिनी नायडू ने एनी बेसेंट और अन्य के साथ महिला भारतीय संघ (डब्ल्यूआईए) की स्थापना की। डब्ल्यूआईए का मुख्य उद्देश्य महिलाओं को वोट देने का अधिकार प्राप्त करना था। उन्होंने महिलाओं के लिए समान अधिकारों की वकालत करने के लिए लंदन में एक महिला मतदान अधिकार प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया और महिलाओं के मताधिकार के लिए अंतरराष्ट्रीय आंदोलन में भी शामिल हुईं।

समानता का अधिकार :उन्होंने 1925 के सत्र में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की अध्यक्षता की, जिससे वह कांग्रेस की अध्यक्ष बनने वाली पहली भारतीय महिला बनीं। उन्होंने कांग्रेस अध्यक्ष के रूप में अपनी नियुक्ति को 'भारतीय नारीत्व के प्रति एक उदार श्रद्धांजलि' माना। 1926 में, उनके नेतृत्व में महिला आंदोलन को पहली सफलता तब मिली, जब महिलाओं को नामांकन द्वारा विधायिका के सदस्यों के रूप में नियुक्त किया गया।

प्रतिनिधित्व का अधिकार : उन्होंने कई महिला संगठनों के द्वारा देश में महिलाओं के अधिकारों की लड़ाई में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने महिला सम्मेलन के पटना सत्र को संबोधित करते हुए पर्दा प्रथा के खिलाफ बात की और महिलाओं को घूंघट छोड़ने के लिए आमंत्रित किया। उन्होंने तलाक के अधिकार के लिए भी अभियान चलाया।

नमक सत्याग्रह में भूमिका : सन् 1930 के प्रसिद्ध नमक सत्याग्रह में सरोजिनी नायडू गांधी जी के साथ चलने वाले स्वयंसेवकों में से एक थीं। गांधी जी की गिरफ्तारी के बाद गुजरात में धरासणा में लवण–पटल की पिकेटिंग करते हुए जब तक स्वयं गिरफ्तार न हो गईं, तब तक वह आंदोलन का संचालन करती रहीं। धरासणा वह स्थान था जहां पुलिस ने शान्तिमय और अहिंसक सत्याग्रहियों पर घोर अत्याचार किए थे। सरोजिनी नायडू ने उस परिस्थिति का बड़े साहस के साथ सामना किया और अपने बेजोड़ विनोदी स्वभाव से वातावरण को सजीव बनाये रखा। बाद में गांधी जी को सन् 1931 में लंदन में होने वाले दूसरे गोलमेज सम्मेलन में आमंत्रित किया गया। उस समय गांधी जी के साथ, सम्मेलन में शामिल होने वाले अनेक लोगों में से सरोजिनी नायडू भी थीं। उनका जीवन प्रेरणादायक था। आने वाली पीढ़ियां उन्हें प्रेरणास्रोत के रूप में याद करती रहेंगी। जैसा कि गांधी जी ने कहा था कि सच्चे अर्थों में वह 'भारत कोकिला' थीं। 2 मार्च सन् 1949 को उनकी मृत्यु हो गई। अपनी एक कविता में उन्होंने मृत्यु को कुछ देर के लिए ठहर जाने को कहा था.....

मेरे जीवन की क्षुधा, नहीं मिटेगी जब तक
मत आना हे मृत्यु, कभी तुम मुझ तक।

ISSN No. 2581-3528

पर्यटन की दृष्टि से अयोध्या

डॉ. वेद प्रकाश
एसोसिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष

पावन सरयू नदी के तट पर स्थित अयोध्या नगरी कोसल साम्राज्य की राजधानी थी। हिंदू धर्म के 7 सबसे पवित्र शहरों में से एक अयोध्या का इतिहास करीब 9000 साल पुराना है। अयोध्या नगरी धार्मिक स्थल होने के साथ-साथ, सामाजिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक महत्ता का प्रतीक भी है, जो विभिन्न भागों से आने वाले पर्यटकों को आकर्षित कर रही है। अयोध्या मुख्य रूप से मंदिरों का शहर है, जिसकी स्थापना मनु ने की थी। यहां हिंदू, जैन व बौद्ध धर्म के अवशेष भी प्राप्त हुए है। इसकी प्राचीनता ही इसका सबसे उच्चतम गुण है जो यात्रियों को बेहद लुभाती है। हम बात करें, तो अयोध्या नगरी की स्थापना सूर्यपुत्र वैवस्वत मनु महाराज द्वारा की गई। मनु के कई पुत्र हुए जिनमें से इक्ष्वाकु वंश में आगे चलकर दशरथ का जन्म हुआ। इसलिए अयोध्या अनादिकाल से भक्तों और पर्यटकों को लुभाती रही है। वहीं एक बार फिर अयोध्या में भव्य एवं दिव्य श्रीराम मंदिर और रामलला की प्राण प्रतिष्ठा ने पर्यटन के लिए समृद्धि और सांस्कृतिक एकता का संदेश दिया है।

दीपोत्सव और राम मंदिर निर्माण के चलते अयोध्या में पर्यटकों की संख्या पहले की तुलना में कई गुना बढ़ गयी है। साल दर साल यह संख्या बढ़ती ही जा रही है। प्राण प्रतिष्ठा के बाद आने वाले महीनों में पर्यटकों की संख्या और बढ़ेगी। पिछले पांच साल में 2.5 गुना पर्यटक बढ़े हैं। आगामी वर्ष में पर्यटकों की संख्या में ऐतिहासिक वृद्धि अवश्यंभावी है।

अयोध्या राम की जन्मभूमि होने के साथ-साथ, सामाजिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक महत्ता का केंद्र भी है। इसलिए अनादिकाल से अयोध्या नगरी विभिन्न मतों और पंथों के लिए समन्वय का केंद्र भी रही है।

राम मंदिर के मुख्य डिजाइनर चंद्रकांत सोमपुरा के पुत्र आर्किटेक्ट आशीष सोमपुरा का मानना है कि मंदिर बनने के बाद यहां लगभग 1 लाख तक लोग हर दिन दर्शन के लिए आएंगे यानी करीब 3.6 करोड़ प्रति वर्ष। अयोध्या में इंटरनेशनल एयरपोर्ट भी बनकर तैयार हो गया है, जिसका नाम महर्षि वाल्मीकि के नाम पर रखा गया है। इस तरह आने वाले समय में अयोध्या में पर्योटकों की संख्या में रिकॉर्ड वृद्धि देखने को मिलेगी। श्रीराम मंदिर के अलावा अन्य प्रमुख दर्शनीय स्थल निम्न हैं।

हनुमानगढ़ी मंदिर :- अयोध्या रेलवे स्टेशन से लगभग 1 किलोमीटर दूरी पर भगवान हनुमान को समर्पित मंदिर स्थित है, जिसका निर्माण विक्रमादित्य द्वारा करवाया गया था। यही मंदिर आज हनुमानगढ़ी के नाम से प्रसिद्ध है। मंदिर के प्रांगण में माता अंजनी की गोद में बैठे हुए बाल हनुमान हैं। ऐसी मान्यता है कि पवन पुत्र हनुमान अयोध्या के रक्षक के रूप में कोतवाल की भूमिका निभाते हैं।

राम की पैड़ी :- राम की पैड़ी सरयू नदी के किनारे स्थित घाटों की एक श्रृंखला है। यहां स्नान करने से पाप धुल जाते हैं। पूर्णिमा और दीपावली पर इस घाट की सुंदरता देखते ही बनती है।

कनक भवन :- कनक भवन को माता कैकैयी ने भगवान राम और माता सीता को उपहार स्वरूप दिया था। राम जन्मभूमि के उत्तर में स्थित यह मंदिर अपनी कलाकृति के लिए प्रसिद्ध है, जिसका जीर्णोद्धार पहले राजा विक्रमादित्य एवं बाद में भानु कुमारी ने कराया था। इस मंदिर के मुख्य गर्भ गृह में भगवान राम, माता सीता की प्रतिमा स्थापित है।

नागेश्वर नाथ मंदिर :- नागेश्वर नाथ मंदिर राम की पैड़ी में स्थित है। कहा जाता है कि भगवान राम के पुत्र कुश का स्नान करते समय बाजूबंद खो गया था। जिसे एक नाग कन्या ने वापस किया।। वह कन्या शिव भक्त थी। अतः उस नागकन्या के लिए कुश ने इस मंदिर का निर्माण करवाया था। राजा

ISSN No. 2581-3528

विक्रमादित्य के शासनकाल तक यह मंदिर अच्छी स्थिति में था। नवाब सफदरगंज के मंत्री नवल राय द्वारा 1750 में इस मंदिर का जीर्णोद्धार कराया गया। इस मंदिर में शिवरात्रि का पर्व बड़े धूमधाम से मनाया जाता है।

देवकाली मंदिर :- देवकाली मंदिर का उल्लेख रामायण में मिलता है। देवकाली मंदिर के बारे में मान्यता है कि माता सीता गिरिजा देवी की मूर्ति लेकर अयोध्या आई थीं। उस मूर्ति की स्थापना के लिए राजा दशरथ ने एक भव्य मंदिर का निर्माण कराया था। उस मंदिर में माता सीता प्रतिदिन मां गिरिजा की पूजा करती थीं। माता देवकाली की भव्य प्रतिमा आज भी यहां स्थापित है, जो पर्यटन का प्रमुख आकर्षण केंद्र है।

जैन श्वेतांबर मंदिर :- अयोध्या नगरी का जैन धर्म में भी विशेष स्थान है। जैन धर्म के पांच तीर्थंकरों, आदिनाथ, अजित नाथ, अभिनंद नाथ, सुमति नाथ, एवं अनंतनाथ की जन्मस्थली होने का गौरव प्राप्त है। उनकी स्मृति में यहां के नवाब के कोषाध्यक्ष ने पांच मंदिरों का निर्माण करवाया था। दिगंबर जैन मंदिर प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव को समर्पित है। आधुनिक समय में अयोध्या के रायगंज नामक स्थान पर ऋषभदेव की 31 फीट ऊंची प्रतिमा स्थापित है।

बिरला मंदिर :- बिरला मंदिर यहां का एक प्रमुख पर्यटन स्थल है। यह भगवान राम और माता सीता को समर्पित मंदिर है। यह मंदिर अयोध्या बस स्टॉप के सामने है।

त्रेता के ठाकुर मंदिर :- अयोध्या के नया घाट के पास स्थित त्रेता के ठाकुर मंदिर का निर्माण 300 साल पहले उस समय के राजा कुल्लू द्वारा किया गया था। त्रेता के ठाकुर मंदिर में भगवान राम, सीता, लक्ष्मण, हनुमान सहित कई मूर्तियां हैं, जिन्हें एक ही काले बलुआ पत्थर से तराशा गया है। यह मंदिर वर्ष में केवल एकादशी के दिन जनता के लिए खुला रहता है।

तुलसी स्मारक भवन :- तुलसी स्मारक भवन का निर्माण 1969 में हुआ था। तुलसी स्मारक भवन वह स्थान है जहां तुलसीदास ने श्रीरामचरितमानस की रचना की थी। स्मारक में 'अयोध्या अनुसंधान संस्थान' नामक शोध केंद्र भी है। इसका उपयोग अयोध्या के बारे में साहित्यिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक जानकारी के अध्ययन और महत्व को जानने के लिए किया जाता है।

छोटी छावनी :- छोटी छावनी को वाल्मीकि भवन या मणिराम दास छावनी के नाम से भी जाना जाता है। यह अयोध्या की शानदार संरचनाओं में से एक है। अयोध्या आएं तो इस जगह पर एक बार जरूर देखें। यहां पुरानी गुफाएं देखने को मिल जाएंगी। छोटी छावनी में कुल 34 गुफाएं हैं, जिसमें 12 बौद्ध, केंद्र में 17 हिंदू मंदिर और उत्तर में 5 जैन मंदिर है।

पर्यटकों की संख्या

क्रम	साल	पर्यटक
1	2017	2,84,299
2	2018	3,18,545
3	2019	3,42,332
4	2020	1,73,530
5	2021	2,83,208
6	2022	2,39,10,479

गुप्तार घाट :- यह घाट सरयू नदी के तट पर बसा है। जिसे घग्गर घाट के नाम से भी जाना जाता है। यह एक प्रसिद्ध स्थल है। पहले गुप्तार घाट की सीढ़ियों के पास कंपनी गार्डन हुआ करता था जिसे अब गुप्त घाट वन के नाम से जाना जाता है। इसी स्थान पर भगवान राम ने ध्यान किया था और उसके बाद जल समाधि ली थी।

अयोध्या का नया रूप : अयोध्या में चार वेदों की तर्ज पर चार पथ बनाए गए हैं। अयोध्या में धर्म पथ, भक्ति पथ, राम जन्मभूमि पथ और सबसे लंबा 13 किलोमीटर का राम पथ बनाया गया है। अयोध्या में जहां डेढ़ साल पहले तुलसी उद्यान था आज वहां पर राम पथ है। लता मंगेशकर चौक से सहादत गंज के 13 किलोमीटर के रास्ते का चौड़ीकरण हुआ है। रामपथ में आगे बढ़ने पर हनुमानगढ़ी की ओर जाने वाला रास्ता भक्ति पथ मिलता है। भक्ति पथ की दुकान और घरों में केसरिया रंग रोगन किया गया है। यह रंग इस रास्ते को रामपथ से अलग करता है, चूंकि अयोध्या के कोतवाल हनुमान हैं, इसलिए लोग पहले भक्ति मार्ग से चलकर हनुमानगढ़ी के दर्शन करते हैं। इस तरह रामपथ से आगे बढ़ने पर राम जन्मभूमि पथ पर पहुंचा जा सकता है।

टूरिज्म फैसिलिटेशन सेंटर:- उत्तर प्रदेश के साथ ही देश की आस्था और आध्यात्मिकता का केंद्र रही अयोध्या नगरी अब श्रीराम मंदिर के निर्माण के साथ ही दुनियाभर पर अपनी छाप छोड़ने के लिए तैयार है। श्रीराम मंदिर और रामलला के प्राण प्रतिष्ठा के उपरान्त न केवल देश बल्कि दुनिया के अलग-अलग कोनों से श्रद्धालुओं व पर्यटकों की संख्या बढ़ेगी। इस बात को ध्यान में रखकर सीएम योगी आदित्यनाथ सरकार अयोध्या में 130 करोड़ रुपये की अनुमानित लागत से 4.40 एकड़ क्षेत्र में टूरिज्म फैसिलिटेशन सेंटर विकसित करने की कार्ययोजना पर कामय कर रही है। क्योंकि पर्यटकों की संख्या में 10 गुना से अधिक की वृद्धि का अनुमान है। इससे यहां की अर्थव्यवस्था में भी क्रांतिकारी बदलाव आएगा। एक अनुमान के मुताबिक अयोध्या में प्राण प्रतिष्ठा समारोह के बाद हर वर्ष लगभग एक से दो करोड़ पर्यटक/श्रद्धालु आएंगे। हर पर्यटक यहां कम से दो-ढ़ाई हजार रुपये भी खर्च करेगा तो इससे सालाना 55 हजार करोड़ की आय होगी। इससे सिद्ध होता है जब-जब सनातन संस्कृति की जड़ें मजबूत हुई हैं, तब-तब देश की इकोनॉमी को भी पंख लग गये हैं।

ISSN No. 2581-3528

संस्कृति की वाहक है मातृभाषा

डॉ. नीलम कुमारी
विभागाध्यक्ष, अंग्रेजी विभाग, किसान पी. जी. कॉलेज सिंभावली, हापुड चौ. चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा-ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल।।

मातृभाषा के बिना किसी भी प्रकार की उन्नति संभव नहीं है। हम मातृभाषा के महत्व को इस रूप में समझ सकते हैं कि अगर हमको पालने वाली, 'मां' होती है, तो हमारी भाषा भी हमारी मां है। हमको पालने का कार्य हमारी मातृभाषा भी करती है इसलिए भारतेन्दु जी ने 'मां' और 'मातृभाषा' को बराबर का दर्जा प्रदान किया। मातृभाषा, जन्म से हमें दिया गया एक उपहार है, जो हमारी प्रारंभिक यादों, भावनाओं और सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों की वाहक है। इसका महत्व मात्र संचार से आगे बढ़कर हमारी पहचान के मूल ढांचे में समाहित हो जाता है। मातृभाषा हमारी अभिव्यक्ति का जरिया है। लेकिन वर्तमान समय में मातृभाषा को संरक्षण ना मिलने के कारण पांच दशकों में अब तक लगभग 50 मातृ भाषाएं विलुप्त हो चुकी हैं।

भाषाएं हमारी मूर्त और अमूर्त विरासत को संरक्षित और विकसित करने का सबसे शक्तिशाली साधन हैं। मातृभाषाओं के प्रसार को बढ़ावा देने के सभी कदम न केवल भाषाई विविधता और बहुभाषी शिक्षा को प्रोत्साहित करने में मदद करेंगे, बल्कि दुनिया भर में भाषाई और सांस्कृतिक परंपराओं के बारे में पूर्ण जागरूकता विकसित करने, समझ, सहिष्णुता और संवाद के आधार पर एकजुटता को प्रेरित करने में भी मदद करेंगे।

मातृभाषा के अस्तित्व को बचाने के लिए तथा सभी में अपनी मातृभाषा की उन्नति की लौ जलाने के लिए प्रत्येक वर्ष 21 फरवरी के दिन अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस भी मनाया जाता है। 17 नवंबर 1999 को यूनेस्को द्वारा 21 फरवरी को अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस घोषित किया गया था। यह 21 फरवरी 2000 से दुनिया भर में मनाया जा रहा है। यहां आपको भाषाओं में भी अनेक विविधताएं देखने को मिलती हैं। हालांकि अधिकतम भारतीयों की मातृभाषा हिंदी है। वर्ष 2011 की गणना के अनुसार, लगभग 43.7 फीसदी लोगों ने हिंदी भाषा को अपनी मातृभाषा के रूप में स्वीकार किया है। आज के समय में हिंदी का प्रयोग हर क्षेत्र में उन्नत स्तर पर

हम मातृभाषा के महत्व को इस रूप में समझ सकते हैं कि अगर हमको पालने वाली मां होती है, तो हमारी भाषा भी हमारी मां है। इसलिए भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने 'मां' और 'मातृभाषा' को बराबर का दर्जा प्रदान किया।

हो रहा है। लेकिन इसके बावजूद अधिकतर लोग अन्य देशों की भाषा को अधिक प्राथमिकता देते हैं। भारतवासियों को अपने अंदर यह जागरूकता लानी होगी कि वह अपनी मातृभाषा का विकास करें। स्वयं मातृभाषा का ज्ञान अर्जित करें और प्रोत्साहन करने का प्रयास करें। आप जितनी अधिक भाषाएं जानेगें, सीखेंगे वह आपके लिए ही उत्तम होगा। आप जिस किसी भी प्रांत, राज्य से हैं कम से कम आपको वहां की बोली तो अवश्य आनी चाहिए। आपको वहां की बोली सीखने का कोई भी मौका नहीं गंवाना चाहिए; कम से कम वहां की गिनती, बाल कविताएं और लोकगीत। पूरी दुनिया को ट्विंकल ट्विंकल लिटिल स्टार या बा–बा ब्लैक शीप गुनगुनाने की कोई आवश्यकता नहीं है। अपनी लोकभाषा में कितने अच्छे और गूढ़ अर्थ के लोकगीत, बाल कविताएं, दोहे, छंद चौपाइयां हैं जिन्हें हम प्रायः भूलते जा रहे हैं।

भारत के हर प्रांत में बेहद सुन्दर दोहावली उपलब्ध है और यही बात विश्व भर के लिए भी सत्य है। उदाहरण के लिए एक जर्मन बच्चा अपनी मातृभाषा, जर्मन में ही गणित सीखता है न कि अंग्रेजी में क्योंकि जर्मन उसकी मातृभाषा है। इसी प्रकार एक इटली में रहने वाला बच्चा भी गिनती इटैलियन भाषा में और स्पेन का बालक स्पैनिश भाषा में सीखता है।

एक भाषा के रूप में हिंदी न सिर्फ भारत की पहचान है बल्कि यह हमारे जीवन मूल्यों, संस्कृति एवं संस्कारों की सच्ची संवाहक, संप्रेषक और परिचायक भी है। बहुत सरल, सहज और सुगम भाषा होने के साथ हिंदी विश्व की संभवतः सबसे वैज्ञानिक भाषा है जिसे दुनिया भर में समझने, बोलने और चाहने वाले लोग बहुत बड़ी संख्या में मौजूद हैं। यह विश्व में तीसरी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है जो हमारे पारंपरिक ज्ञान, प्राचीन सभ्यता और आधुनिक प्रगति के बीच एक सेतु भी है। हिंदी भारत संघ की राजभाषा होने के साथ ही ग्यारह राज्यों और तीन संघ शासित क्षेत्रों की भी प्रमुख राजभाषा है। संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल अन्य इक्कीस भाषाओं के साथ हिंदी का एक विशेष स्थान है।

देश में तकनीकी और आर्थिक समृद्धि के साथ–साथ अंग्रेजी पूरे देश पर हावी होती जा रही है। हिन्दी देश की राजभाषा

ISSN No. 2581-3528

होने के बावजूद आज हर जगह अंग्रेजी का वर्चस्व कायम है। हिन्दी जानते हुए भी लोग हिन्दी में बोलने, पढ़ने या काम करने में हिचकने लगे हैं। इसलिए सरकार का प्रयास है कि हिन्दी के प्रचलन के लिए उचित माहौल तैयार किया जाये।

राजभाषा हिंदी के विकास के लिए खासतौर से राजभाषा विभाग का गठन किया गया है। भारत सरकार का राजभाषा विभाग इस दिशा में प्रयासरत है कि केंद्र सरकार के अधीन कार्यालयों में अधिक से अधिक कार्य हिंदी में हो। केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी का अधिकाधिक उपयोग सुनिश्चित करने हेतु भारत सरकार के राजभाषा विभाग द्वारा उठाए गए कदमों के परिणामस्वरूप कंप्यूटर पर हिंदी में कार्य करना अधिक आसान एवं सुविधाजनक हो गया है। इसी क्रम में राजभाषा विभाग द्वारा वेब आधारित सूचना प्रबंधन प्रणाली विकसित की गई है जिससे भारत सरकार के सभी कार्यालयों में हिंदी के उत्तरोत्तर प्रयोग से संबंधित तिमाही प्रगति रिपोर्ट तथा अन्य रिपोर्ट राजभाषा विभाग को त्वरित गति से भिजवाना आसान हो गया है। सभी मंत्रालयों और विभागों ने अपनी वेबसाइटें हिंदी में भी तैयार कर ली हैं। सरकार के विभिन्न मंत्रालयों एवं विभागों द्वारा संचालित जन कल्याण की विभिन्न योजनाओं की जानकारी आम नागरिकों को हिन्दी में मिलने से गरीब, पिछड़े और कमजोर वर्ग के लोग भी लाभान्वित होते हुए देश की मुख्यधारा से जुड़ रहे हैं।

देश की स्वतंत्रता से लेकर हिन्दी ने कई महत्वपूर्ण उपलब्धियां प्राप्त की हैं। भारत सरकार द्वारा विकास योजनाओं तथा नागरिक सेवाएं प्रदान करने में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा दिया जा रहा है। हिंदी तथा प्रांतीय भाषाओं के माध्यम से हम बेहतर जन सुविधाएं लोगों तक पहुंचा सकते हैं। इसके साथ ही विदेश मंत्रालय द्वारा ''विश्व हिंदी सम्मेलन'' और अन्य अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों के माध्यम से हिंदी को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर लोकप्रिय बनाने का कार्य किया जा रहा है। इसके अलावा प्रत्येक वर्ष सरकार द्वारा ''प्रवासी भारतीय दिवस'' मनाया जाता है, जिसमें विश्व भर में रहने वाले प्रवासी भारतीय भाग लेते हैं। विदेशों में रह रहे प्रवासी भारतीयों की उपलब्धियों के सम्मान में आयोजित इस कार्यक्रम से भारतीय मूल्यों का विश्व में और अधिक विस्तार हो रहा है। विश्व भर में करोड़ों की संख्या में भारतीय समुदाय के लोग एक संपर्क भाषा के रूप में हिन्दी का इस्तेमाल कर रहे हैं। इससे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी को एक नई पहचान मिली है। यूनेस्को की सात भाषाओं में हिंदी को भी मान्यता मिली है।

भारतीय विचार और संस्कृति का वाहक होने का श्रेय हिन्दी को ही जाता है। आज संयुक्त राष्ट्र जैसी संस्थाओं में भी हिंदी की गूंज सुनाई देने लगी है। पिछले वर्ष सितंबर माह में हमारे प्रधानमंत्री द्वारा संयुक्त राष्ट्र महासभा में हिंदी में ही अभिभाषण दिया गया था। विश्व हिंदी सचिवालय विदेशों में हिंदी का प्रचार–प्रसार करने और संयुक्त राष्ट्र में हिंदी को आधिकारिक भाषा बनाने के लिए कार्यरत है। उम्मीद है कि हिंदी को शीघ्र ही संयुक्त राष्ट्र की आधिकारिक भाषा का दर्जा भी प्राप्त हो सकेगा।

हिंदी आम आदमी की भाषा के रूप में देश की एकता का सूत्र है। सभी भारतीय भाषाओं की बड़ी बहन होने के नाते हिंदी विभिन्न भाषाओं के उपयोगी और प्रचलित शब्दों को अपने में समाहित करके सही मायनों में भारत की संपर्क भाषा होने की भूमिका निभा रही है।

हिंदी आम आदमी की भाषा के रूप में देश की एकता का सूत्र है। सभी भारतीय भाषाओं की बड़ी बहन होने के नाते हिंदी विभिन्न भाषाओं के उपयोगी और प्रचलित शब्दों को अपने में समाहित करके सही मायनों में भारत की संपर्क भाषा होने की भूमिका निभा रही है। हिंदी जन–आंदोलनों की भी भाषा रही है। हिंदी के महत्व को गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर ने बड़े सुंदर रूप में प्रस्तुत किया था। उन्होंने कहा था, 'भारतीय भाषाएं नदियां हैं और हिंदी महानदी'। हिंदी के इसी महत्व को देखते हुए तकनीकी कंपनियां इस भाषा को बढ़ावा देने की कोशिश कर रही हैं। यह खुशी की बात है कि सूचना प्रौद्योगिकी में हिन्दी का इस्तेमाल बढ़ रहा है। आज वैश्वीकरण के दौर में, हिंदी विश्व स्तर पर एक प्रभावशाली भाषा बनकर उभरी है। आज पूरी दुनिया में करीब 175 से अधिक विश्वविद्यालयों में हिन्दी भाषा पढ़ाई जा रही है। ज्ञान–विज्ञान की पुस्तकें बड़े पैमाने पर हिंदी में लिखी जा रही है। सोशल मीडिया और संचार माध्यमों में हिंदी का प्रयोग निरंतर बढ़ रहा है।

भाषा का विकास उसके साहित्य पर निर्भर करता है। आज के तकनीकी युग में विज्ञान और इंजीनियरिंग के क्षेत्र में भी हिंदी में काम को बढ़ावा देना चाहिए, ताकि देश की प्रगति में ग्रामीण जनसंख्या सहित सबकी भागीदारी सुनिश्चित हो सके। इसके लिए यह अनिवार्य है कि हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं में तकनीकी ज्ञान से संबंधित साहित्य का सरल अनुवाद किया जाए। इसके लिए राजभाषा विभाग ने सरल हिंदी शब्दावली भी तैयार की है। राजभाषा विभाग द्वारा राष्ट्रीय ज्ञान–विज्ञान मौलिक पुस्तक लेखन योजना के द्वारा हिंदी में ज्ञान–विज्ञान की पुस्तकों के लेखन को बढ़ावा दिया जा रहा है। इससे हमारे विद्यार्थियों को ज्ञान–विज्ञान संबंधी पुस्तकें हिंदी में उपलब्ध होंगी। हिन्दी भाषा के माध्यम से शिक्षित युवाओं को रोजगार के अधिक अवसर उपलब्ध हो सकें, इस दिशा में निरंतर प्रयास भी जरूरी है।

भाषा वही जीवित रहती है जिसका प्रयोग जनता करती है। भारत में लोगों के बीच संवाद का सबसे बेहतर माध्यम हिन्दी है। इसलिए इसको एक–दूसरे में प्रचारित करना चाहिये। इस कारण हिन्दी दिवस के दिन उन सभी से निवेदन किया जाता है कि वे अपने बोलचाल की भाषा में भी हिंदी का ही उपयोग करें। हिंदी भाषा के प्रसार से पूरे देश में एकता की भावना और मजबूत होगी।

ISSN No. 2581-3528

वसंत पंचमी : प्रकृति परिवर्तन और संकल्प का पर्व

डॉ. कामिनी चौहान

वसंत पंचमी को मां सरस्वती और और लक्ष्मी देवी का जन्म दिवस भी मनाया जाता है। माघ मास की पंचमी से ही ऋतुओं के राजा वसंत ऋतु का आगमन माना जाता है, जिसे वसंत पंचमी के नाम से जाना जाता है। यह प्रकृति परिवर्तन और प्रकृति रक्षण के संकल्प का पर्व है।

वसंत पंचमी या श्री पंचमी को हिंदू धर्म में सरस्वती पूजा के नाम से भी जाना जाता है, क्योंकि हिंदू मान्यताओं के अनुसार माघ मास की शुक्ल पक्ष की पंचमी को देवी सरस्वती का अवतरण हुआ था। इसलिए इस दिन ज्ञान की देवी मां सरस्वती की पूजा और उनकी स्तुति की जाती है।

सरस्वतीं शारदां च कौमारी ब्रह्मचारिणीम।
वागीश्वरीं बुद्धिदात्री भारतीं भुवनेश्वरीम॥
चंद्रघंटां मरालस्थां जगन्मातरमुत्तमाम।
वरदायिनी सदा वन्दे चतुर्वर्गफलप्रदमाम॥
द्वादशैतानि नामानि सततं ध्यानसंयुतः।
यः पठेत् तस्य जिह्वाग्रे नूनं वसति शारदा॥

वसंत पंचमी को मां सरस्वती और और लक्ष्मी देवी का जन्म दिवस भी मनाया जाता है। माघ मास की पंचमी से ही ऋतुओं के राजा वसंत ऋतु का आगमन माना जाता है जिसे वसंत पंचमी के नाम से जाना जाता है। जिस प्रकार किसी राजा के आगमन पर उसका स्वागत किया जाता है उसी प्रकार वसंत पंचमी के स्वागत के लिए कोयल, पेड़ पौधे आदि सभी 40 दिन पहले से सुसज्जित होने लगते हैं। सूर्य देव के विस्तार को देखकर सर्दी भी धीरे–धीरे पीछे हटने लगती है। हिंदू मान्यताओं के अनुसार जब ब्रह्मा जी ने सृष्टि की रचना की, तो उन्होंने सृजित सृष्टि को देखा और महसूस किया कि वातावरण बहुत शांत और निस्तेज था। तब भगवान विष्णु के आदेश पर ब्रह्मा जी ने अपने कमंडल से पृथ्वी पर जल छिड़का और इस जल से एक चतुर्भुज एवं अद्भुत स्त्री शक्ति का जन्म हुआ। उस अद्भुत शक्ति के एक हाथ में वीणा तथा दूसरा हाथ वर की मुद्रा में तथा अन्य दो हाथों में पुस्तक व माला थी। भगवान के आग्रह पर उस शक्ति ने वीणा बजाई जिसकी धुन के कारण पृथ्वी पर रहने वाले सभी जीवों व मनुष्यों को वाणी प्राप्त हुई उस क्षण के बाद इस शक्ति को सरस्वती कहां जाने लगा।

ज्ञान की देवी : देवी सरस्वती ने संपूर्ण सृष्टि को ज्ञान और बुद्धि प्रदान की इसलिए इस पंचमी को सरस्वती की जयंती के रूप में भी मनाया जाता है। मां सरस्वती के शारदा, भगवती, बागेश्वरी, वीणावादिनी, ज्ञानदायिनी जैसे अनेक नाम हैं। संगीत की उत्पत्ति के कारण इन्हें संगीत की देवी के नाम से भी जाना जाता है। वसंत पंचमी कामदेव मदन के जन्म दिवस के रूप में भी मनाया जाता है। हिंदू धर्म को मानने वाले लोग रति मदन की पूजा करते हैं और अपने सुख में दांपत्य

ISSN No. 2581-3528

जीवन की कामना करते हैं। हमारे शास्त्रों में भी मां सरस्वती की पूजा व्यक्तिगत रूप से करने का वर्णन है, पर सार्वजनिक पूजा से समन्वय की भावना बढ़ती है। छात्र व शिक्षक सार्वजनिक रूप से शिक्षण संस्थानों को सजाते हैं तथा मां सरस्वती से ज्ञान व विद्या प्राप्त करने की प्रार्थना करते हैं। विद्यारंभ संस्कार के लिए यह सबसे अच्छा व शुभ दिन माना जाता है।

पूजन की विधि : वसंत पंचमी के दिन प्रातः काल उठकर बेसन युक्त तेल का शरीर पर उबटन करके स्नान करना चाहिए। उसके बाद स्वच्छ पीले वस्त्र पहनकर मां सरस्वती की पूजा के साथ–साथ भगवान विष्णु और कामदेव की भी पूजा करनी चाहिए। केसर युक्त मीठे चावल घर में बनाकर मां को उनका भोग लगाना चाहिए। विद्यार्थियों को मां भगवती की पूजा करनी चाहिये, ताकि मां सरस्वती उनको ज्ञानवान, विद्वान बना सके। इस दिन कवि, लेखक, गायक, वादक, नाटककार, नृत्यकार अपने उपकरणों की पूजा के साथ मां सरस्वती की पूजा करते हैं।

वसंत पंचमी का पौराणिक तथ्य : पुरानी कथाओं के अनुसार वसंत पंचमी त्यौहार की शुरुआत आर्यकाल से मानी जाती है। इस आर्यकालीन सभ्यता का अधिकांश विकास सरस्वती नदी के किनारे हुआ। इस प्रकार सरस्वती नदी को उर्वरता और ज्ञान से जोड़ा जाने लगा तब से वसंत पंचमी हिंदू धर्म में विशेष त्यौहार के रूप में मनाया जाने लगा। पौराणिक कथाओं के अनुसार इस दिन से जुड़ी किवदंती कवि कालिदास की है। जब कवि कालिदास छल से सुंदर राजकुमारी विद्योत्तमा से शादी कर लेते हैं, तो राजकुमारी को कालिदास के मूर्ख होने का पता विवाह के उपरांत चल जाता है और राजकुमारी उनसे वैवाहिक संबंध खत्म कर लेती हैं। जिससे कालिदास दुखी होकर वहां से चले जाते हैं। इस घटना के बाद कालिदास जल में डूब कर

वसंत पंचमी का वैज्ञानिक महत्व भी है, क्योंकि इस माह में सर्दी की अनुभूति कम होने लगती है और मौसम में संतुलन बना रहता है जिंससे मनुष्य इस समय स्वस्थ महसूस करता है।

आत्महत्या करने की कोशिश करते हैं, जिस पर मां सरस्वती जल से बाहर आती हैं और कालिदास से स्नान करने के लिए कहती हैं। स्नान करने के बाद कालिदास को ज्ञान की प्राप्ति हुई और एक महान विद्वान बन गए। इसलिए वसंत पंचमी पर शिक्षा की देवी मां सरस्वती की पूजा अर्चना की जाती है। इसके अलावा वसंत पंचमी के त्यौहार का महत्व हमारे वैदिक व धार्मिक ग्रंथो में विस्तार से बताया गया है। हमारे देश में 6 प्रमुख ऋतुएं हैं, जिसमें वसंत ऋतु को ऋतुराज के नाम से जाना जाता है। मतलब ऋतुओं का राजा। वेदों में बताया गया है कि इस दिन शिक्षा व संगीत से संबंधित चीजों की पूजा करने से मनुष्य को विशेष लाभ व शांति प्राप्त होती है और सफलता प्राप्त होती है। इस दिन पृथ्वी पर नवीनता का पुनः सृजन होता है और पेड़ पौधों पर सुंदर पुष्प और नवीन पत्तों का आना शुरू हो जाता है।

वसंत पंचमी का वैज्ञानिक महत्व : वसंत पंचमी का वैज्ञानिक महत्व भी है, क्योंकि इस माह में सर्दी की अनुभूति कम होने लगती है और मौसम में संतुलन बना रहता है जिंससे मनुष्य इस समय स्वस्थ महसूस करता है। इस पर्व पर सामान्यतः पीले वस्त्र धारण किए जाते हैं, पीला रंग उत्साह बढ़ाता है। पीले वस्त्रों का हमारे धर्म में बहुत महत्व है और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी इसे बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है। यह रंग मन को मजबूत करता है और तंत्रिका तंत्र पर असर डालता है जिससे मस्तिष्क से सेरोटिन हार्मोन निकलता है जो मानसिक तनाव कम करता है और मस्तिष्क को सजग बनाता है साथ ही यह आत्मविश्वास में भी वृद्धि करता है। इस तरह वसंत पंचमी के दिन का उद्देश्य सृष्टि में नव चेतना और नवनिर्माण के कारण हुए आनंद को व्यक्त करना और आनंदित होना है। इस दिन का कृषि उन्नति में भी बड़ा महत्व है। इस समय नई फसल को घर लाया जाता है और भगवान को अर्पित किया जाता है। इस दिन गणेश, शिव, इंद्र और सूर्य देव की पूजा की जाती है। वृक्षों पर नए फूलों में पत्ते आने शुरू हो जाते हैं जिससे वातावरण में सकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह रहता है। खेतों में सरसों के फूल सोने की तरह चमकने लगते हैं तथा गेहूं की बालियां सुनहरी होने लगती हैं। आम व अन्य फलों के पेड़ों पर बौर आने लगते हैं। खेतों में हर तरफ तितलियों और भंवरों के गुनगुनाने की आवाज सुनाई पड़ने लगती है।

अतः वसंत पंचमी का त्यौहार सभी भारतवासियों के लिए महत्वपूर्ण है। यह त्यौहार हमें प्रकृति से प्रेम व स्नेह के लिए प्रेरित करता है और सीख देता है कि हमें प्रकृति से छेड़छाड़ नहीं करनी चाहिए। इस दिन मां सरस्वती की पूजा मन से करनी चाहिए, और पर्यावरण की रक्षा का संकल्प लेकर मन में धर्म के प्रति पवित्रता और प्रकृति के संरक्षण के प्रति विशेष ध्यान देना चाहिए।

ISSN No. 2581-3528

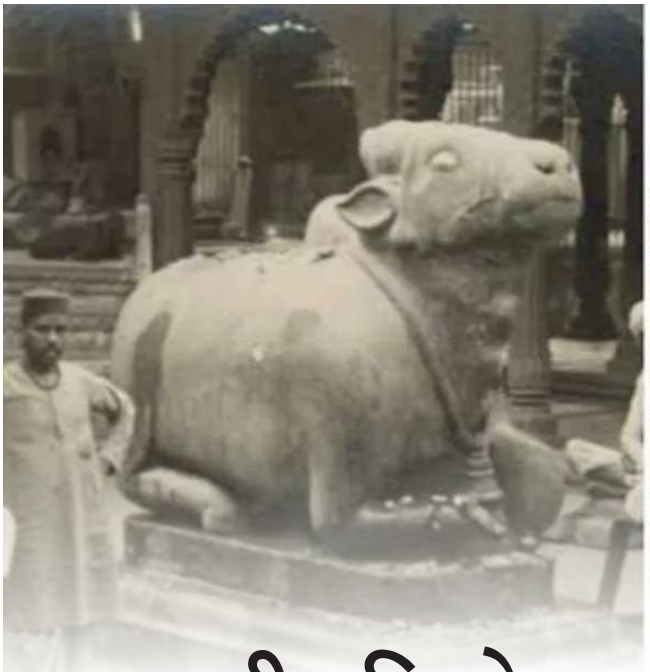

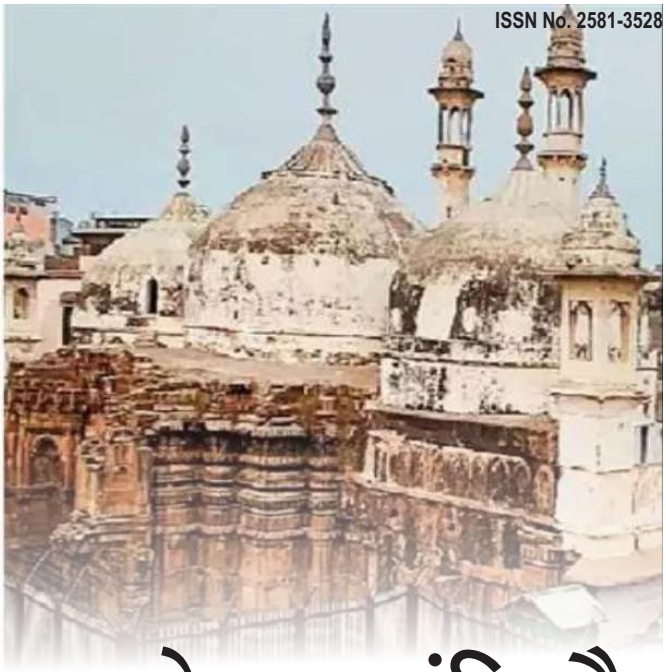

ज्ञानवापी : विश्वेश्वर महादेव का मंदिर है

श्रेयांशी
राजनीति विज्ञान ऑनर्स छात्रा
दौलत राम कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

काशी विश्वनाथ मंदिर परिसर में लगभग 30 सालों के बाद 'व्यास जी के तहखाने' में न्यायालय के आदेश पर जब से पूजा प्रारंभ हुई है, तब से ज्ञानवापी पुन: चर्चा में है। 'व्यास जी का तहखाना' ज्ञानवापी परिसर के दक्षिणी छोर पर स्थित है, इसी के ठीक सामने काशी विश्वनाथ मंदिर के गर्भगृह में स्थित नंदी की मूर्ति है। स्कंदपुराण के काशीखंड में भी ज्ञानवापी का विस्तृत उल्लेख है, जो कि इस बात को प्रमाणित करता है कि यह सनातनी हिन्दुओं का स्थल है।

ज्ञानवापी शब्द का अर्थ ज्ञान का सरोवर अथवा ज्ञान का कुआं होता है, जिसका उल्लेख इस्लाम में कहीं दिखाई नहीं देता, इसके अतिरिक्त हिन्दू धर्म में भगवान शिव को ज्ञान का प्रदाता कहा जाता है। ज्ञानवापी और काशी एक दूसरे के पूरक हैं। काशी का अर्थ है ज्ञान का प्रकाश एवं ज्ञानवापी का अर्थ ज्ञानतत्व से पूर्ण जलयुक्त विशेष आकृति का तालाब है। स्कंदपुराण के काशीखंड में भी ज्ञानवापी का विस्तृत उल्लेख है, जो कि इस बात को प्रमाणित करता है कि यह सनातनी हिन्दुओं का स्थल है। द्वादश ज्योतिर्लिंगों की पावन भूमि भारत को प्राचीनकाल से ही सोने कि चिड़िया कहा जाता रहा है, अतः विदेशी लुटेरे भारत को लूटने के लिए उस पर आक्रमण करते रहे हैं। आक्रांताओं ने जब भारत पर आक्रमण किया तो उन्होंने सबसे पहले हिन्दू और बौद्ध धर्म के सबसे बड़े प्रतीकों और धार्मिक आस्थाओं को ध्वस्त करना शुरू किया। भारत की अस्मिता, सम्मान और पहचान से जुड़े हजारों हिन्दू, जैन और बौद्ध मंदिरों को सोलहवीं सदी तक लगातार तोड़ा गया और उन्हें लूटा गया। चूँकि इस दौरान मुस्लिम आक्रांताओं को अधिक से अधिक संख्या में नमाज के लिए मस्जिदें और रहने के लिए महल भी बनवाने थे, इसलिए उन्होंने शुरुआत में अधिकतर मंदिरों को मस्जिद में बदल दिया।

इसी कड़ी में 1669 में मुगल शासक औरंगजेब ने अविमुक्त क्षेत्र में स्थित विश्वेश्वर महादेव या अविमुक्तेश्वर महादेव के मंदिर को ध्वस्त कर यहां पर मस्जिद का निर्माण कर दिया, जिसे ज्ञानवापी मस्जिद के नाम से जाना जाता है। चीनी यात्री (ह्वेनसांग) के अनुसार उसके समय में काशी में सौ मंदिर थे, किन्तु मुस्लिम आक्रमणकारियों ने सभी मंदिर ध्वस्त कर मस्जिदों का निर्माण किया। ग्यारहवीं शताब्दी में काशी विश्वनाथ मंदिर पर सबसे पहले कुतुबुद्दीन ऐबक ने हमला किया था, इस हमले में मंदिर का कलश टूट गया था लेकिन इसके बाद भी यहाँ पर लगातार पूजा–पाठ होती रही। ईसा पूर्व ग्यारहवीं सदी में राजा हरिशचन्द्र ने जिस विश्वनाथ मंदिर का जीर्णोद्धार करवाया था

ISSN No. 2581-3528

कालांतर में सम्राट विक्रमादित्य ने भी उसी मंदिर का जीर्णोद्धार करवाया जिसे 1194 में मुहम्मद गौरी ने लूटने के बाद तुड़वा दिया था। कहा जाता है कि 1194 में मोहम्मद गौरी के सैनिकों के द्वारा अविमुक्तेश्वर महादेव मंदिर उर्फ़ विश्वेश्वर मंदिर अर्थात् काशी विश्वनाथ मंदिर पर हमला कर इसे लूटा गया और मंदिर को तोड़ा गया। इसे हालांकि दोबारा फिर से निर्मित किया गया। लेकिन जौनपुर के शर्की सुल्तानों ने जौनपुर के ही अटाला देवी के मंदिर को तोड़कर मस्जिद बना दिया था, उन्होंने ही एक बार फिर काशी विश्वनाथ मंदिर पर हमला किया और इसे तोड़ दिया। जिस सुल्तान ने विश्वनाथ मंदिर को तोड़ा उसका नाम सुल्तान महमूद था। इसके बाद अकबर के शासन काल में 1545 में उनके वित्त मंत्री राजा टोडरमल ने फिर से विश्वनाथ मंदिर का पुनर्निर्माण कराया। जब शाहजहां आगरा की गद्दी पर बैठा तो उसके कुछ समय बाद 1632 ईसवी में फिर से विश्वनाथ मंदिर पर हमला करने के लिए उसने अपनी सेना भेजी। इसके बाद अप्रैल 1669 में औरंगजेब ने अपनी सेना काशी विश्वनाथ मंदिर को तोड़ने के लिए भेजी। 2 सितंबर 1669 को काशी विश्वनाथ मंदिर को तोड़े जाने की घटना घटी। डॉ. ए. एस. भट्ट ने अपनी किताब 'दान हारावली' में लिखा है कि टोडरमल ने मंदिर का पुनर्निर्माण 1585 में करवाया था। 18 अप्रैल 1669 को औरंगजेब ने एक फरमान जारी कर काशी विश्वनाथ मंदिर ध्वस्त करने का आदेश दिया (इस विध्वंस के लिए औरंगजेब ने जो आदेश जारी किया था उसकी मूलप्रति आज भी कोलकाता के एशियाटिक सोसाइटी के पुस्तकालय में रखी हुई है।), उस समय के लेखक साकी मुस्तैद खान द्वारा लिखित 'मासीदे आलमगिरी' में भी इस ध्वंस का विस्तृत वर्णन मिलता है। उस समय इस मंदिर को पूरी तरह तोड़ दिया गया था और वहां पर एक मस्जिद बना दी गयी थी। लेकिन जैसे ही मुगल सल्तनत कमजोर होने लगी और मराठों की शक्ति बढ़ने लगी वैसे ही इस महान मंदिर के पुनर्निर्माण के प्रयास फिर से होने लगे। मराठा शासक दत्ताजी सिंधिया और मल्हारराव होल्कर ने अपने शासनकालों में काशी विश्वनाथ मंदिर को फिर से बनवाने की कोशिश की, लेकिन ये दोनों ही सफल नहीं हो सके। अंततः इंदौर की महारानी अहिल्याबाई होल्कर ने 1775–1780 बी केच काशी विश्वनाथ मंदिर का पुनर्निर्माण करते हुए ज्ञानवापी के बगल में ही एक नया मंदिर (काशी विश्वनाथ) बनवा दिया गया। हालांकि मंदिर आज भी अपने मूल स्थान पर पूरी तरह से स्थापित नहीं है और अविमुक्त क्षेत्र में ज्ञानवापी के साथ आज भी मस्जिद स्थित है ।

मोहम्मद तुगलक (1325) के समकालीन लेखक जिनप्रभ सूरी ने अपनी पुस्तक 'विविध कल्प तीर्थ' में उल्लेख किया है कि बाबा विश्वनाथ को देव क्षेत्र कहा जाता था। एक अन्य लेखक फ्यूरर ने भी लिखा है कि फिरोजशाह तुगलक के समय कुछ मंदिर मस्जिद में बदले गये थे।

ज्ञानवापी कूप एक बहुत ही पवित्र और चर्चित स्थान है। यह माना जाता है कि इस कूप का पानी गंगा नदी के पानी से अधिक दिव्य है। किंवदंतियों के अनुसार इस कूप को ज्ञान का कुआं कहा जाता है, जब मुगल सम्राट औरंगजेब ने इस मंदिर पर हमला किया था जब मंदिर के पुजारी ने मंदिर के पवित्र शिवलिंगम की रक्षा के लिए पवित्र शिवलिंगम के साथ इस कूप में छलांग लगाई थी। यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि, हिंदू मंदिर के अवशेषों को ज्ञानवापी मस्जिद की दीवारों पर देखा जा सकता है। मुगल काल तक काशी बड़ा धार्मिक तीर्थ बन गया था और अकबर के समय टोडरमल के किये जीर्णोद्धार के अलावा जयपुर के राजा मानसिंह ने भी यहां एक लाख शिव मंदिर बनवाने का संकल्प लिया था। इतने मंदिर तो कहां बनते, इसलिये कई पत्थरों पर मंदिर की तस्वीर खोदकर संख्या पूरी की गई। तब से काशी के कंकड़ (या कण–कण) में शंकर विराजने का मुहावरा चल निकला। सोलहवीं सदी तक आते–आते यहाँ के पंडे–पुजारियों ने शिव का यह नाम बदल कर विश्वनाथ कर दिया। इससे पहले काशी में अविमुक्तेश्वर के स्वयंभू (स्वयं प्रकट हुए) लिंग की ही पूजा होती थी, जिसे आदि लिंग कहा गया है। यह मंदिर ज्ञानवापी के उत्तर में स्थित था, जबकि विश्वनाथ मंदिर ज्ञानवापी की जगह पर होता था। 16वीं सदी के लगभग लिखा गया पद्मपुराण भी अविमुक्तेश्वर के स्वयं उपजे शिवलिंग को शिवपूजकों द्वारा बनाये और स्थापित किये विश्वेश्वर के लिंग से अलग मंदिरों में होने की पुष्टि करता है। ज्ञानवापी अविमुक्तेश्वर के दक्षिण में थी।

अठारहवीं सदी के दौरान काशी को अपने नियंत्रण में लेने के इच्छुक महादाजी सिंधिया जैसे मराठों ने बहुत कोशिश की, कि ज्ञानवापी मस्जिद की जगह का उपयुक्त मूल्य मुसलमानों को देकर वे वहां विश्वनाथ मंदिर दोबारा बनवा दें, परन्तु अंग्रेज़ मस्जिद तोड़ कर मुसलमानों को अपने विरुद्ध नहीं करना चाहते थे, साथ ही उस समय काशी के पंचद्राविड़ ब्राह्मण भी 1742 में मराठा सरदार मल्हारराव के ज्ञानवापी मस्जिद तोड़ कर उस जगह विश्वेश्वर मंदिर बनवाने के प्रस्ताव के पक्ष में नहीं आये। आखिरकार औरंगज़ेब द्वारा इस मंदिर को तुड़वाने के 125 साल बाद 1775–80 में इंदौर की महारानी

ISSN No. 2581-3528

अहिल्याबाई होलकर द्वारा इस मंदिर का जीर्णोद्धार करवाया गया था। अहिल्याबाई होलकर ने इसी परिसर में विश्वनाथ मंदिर बनवाया जिस पर महाराजा रणजीत सिंह ने 22 मन का सोने का छत्र बनवाया। ग्वालियर की महारानी बैजाबाई ने ज्ञानवापी का मंडप बनवाया और महाराजा नेपाल ने वहां विशाल नंदी प्रतिमा स्थापित करवाई। सन् 1809 में काशी के हिन्दुओं ने जबरन बनाई गई मस्जिद पर कब्जा कर लिया था, क्योंकि यह संपूर्ण क्षेत्र ज्ञानवापी मंडप का क्षेत्र है जिसे आजकल ज्ञानवापी मस्जिद कहा जाता है। 30 दिसंबर 1810 को बनारस के तत्कालीन जिला दंडाधिकारी मि. वाटसन ने 'वाइस प्रेसिडेंट इन काउंसिल' को एक पत्र लिखकर ज्ञानवापी परिसर हिन्दुओं को हमेशा के लिए सौंपने को कहा था, लेकिन यह कभी संभव नहीं हो पाया।

मोहम्मद तुगलक (1325) के समकालीन लेखक जिनप्रभ सूरी ने भी अपनी पुस्तक 'विविध कल्प तीर्थ' में उल्लेख किया है कि बाबा विश्वनाथ को देव क्षेत्र कहा जाता था। एक अन्य लेखक फ्यूरर ने भी लिखा है कि फिरोजशाह तुगलक के समय कुछ मंदिर मस्जिद में बदले गये थे। 1460 में भारतीय विद्वान वाचस्पति ने अपनी पुस्तक 'तीर्थ चिंतामणि' में वर्णन किया है कि अविमुक्तेश्वर और विशेश्वर एक ही लिंग है। दिनांक 11 अगस्त 1936 को दीन मुहम्मद, मुहम्मद हुसैन और मोहम्मद जकारिया ने स्टेट इन काउंसिल में प्रतिवाद संख्या–62 दाखिल किया और दावा किया कि सम्पूर्ण परिसर वक्फ की संपत्ति है। लम्बी गवाहियों एवं ऐतिहासिक प्रमाणों व शास्त्रों के आधार पर यह दावा गलत पाया गया और 24 अगस्त 1937 को वाद खारिज कर दिया गया। इसके खिलाफ इलाहाबाद उच्च न्यायालय में अपील संख्या 466 दायर की गई लेकिन 1942 में उच्च न्यायालय ने इस अपील को भी खारिज कर दिया, और तभी से ज्ञानवापी विवाद आज तक बना हुआ है।

दिसंबर 1991 में वाराणसी व्यवहार न्यायधीश के न्यायालय में स्थानीय अधिवक्ता विजय शंकर जोशी ने स्वयंभू ज्योतिर्लिंग भगवान विश्वेश्वर के 'वाद मित्र' के रूप में इस विवाद (काशी विश्वनाथ ज्ञानवापी केस) को लेकर एक याचिका दायर की। याचिका में कहा गया कि मौजा शहर खास स्थित ज्ञानवापी परिसर के आराजी नंबर 9130, 9131, 9132 रकबा एक बीघे नौ बिस्वा जमीन का पुरातात्विक सर्वेक्षण रडार तकनीक से करके यह बताया जाए कि जो जमीन है, वह मंदिर का अवशेष है या नहीं। साथ ही विवादित ढांचे का फर्श तोड़कर देखा जाए कि 100 फीट ऊंचा ज्योतिर्लिंग स्वयंभू विश्वेश्वरनाथ वहां मौजूद हैं या नहीं। दीवारें प्राचीन मंदिर की हैं या नहीं। याचिकाकर्ता का दावा था कि काशी विश्वनाथ मंदिर के अवशेषों से ही ज्ञानवापी मस्जिद का निर्माण हुआ था। प्राचीन मूर्ति स्वयंभू भगवान विश्वेश्वर की ओर से सोमनाथ व्यास, रामरंग शर्मा और हरिहर पांडेय बतौर वादी इसमें शामिल हैं। याचिका प्रस्तुत होने के कुछ दिनों बाद ही मस्जिद कमेटी ने केंद्र सरकार की ओर से बनाए गए प्लेसेज ऑफ वर्शिप (स्पेशल प्रोविज़न) ऐक्ट, 1991 का संदर्भ देकर हाईकोर्ट में चुनौती दी। इसके बाद इलाहाबाद हाईकोर्ट ने वर्ष 1993 में स्टे लगाकर

ISSN No. 2581-3528

यथास्थिति बनाये रखने का आदेश दिया था। वर्ष 2019 को भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) के विशेषज्ञों से संपूर्ण मंदिर और मस्जिद परिसर का सर्वेक्षण करने का अनुरोध किया गया। वर्ष 2019 में मंदिर पक्ष की ओर से न्यायालय में प्रार्थना पत्र प्रस्तुत कर निवेदन किया गया था कि ज्ञानवापी में जो पुरातन विश्वनाथ मंदिर मौजूद था, उसे 1669 में गिराकर उसके एक भाग पर ये ढांचा बनाया गया है। पुरातन मंदिर के सारे अवशेष उस परिसर में ढांचे के नीचे मौजूद हैं। ज्योतिर्लिंग को पत्थर की पट्टियों से ढक दिया गया है। पुरातत्व विभाग इसका खनन करे और साक्ष्य कोर्ट में प्रस्तुत करे। पूरे मामले में वादी के तौर पर स्वयंभू भगवान विश्वेश्वर काशी विश्वनाथ और दूसरा पक्ष अंजुमन इंतजामिया मस्जिद और सुन्नी सेंट्रल वक्फ बोर्ड हैं। अंजुमन इंतजामिया मस्जिद की ओर से अधिवक्ता मुमताज अहमद, रईस अहमद सेंट्रल वक्फ बोर्ड यूपी तौफीक खान और अभय यादव ने कोर्ट में बहस की थी। जनवरी 2020 में अंजुमन इंतजामिया मस्जिद समिति ने ASI के सर्वेक्षण कराए जाने की मांग पर अपना विरोध दर्ज किया था। 2 अप्रैल 2021 को दोनों पक्षों की बहस सुनने के बाद कोर्ट ने फैसला सुरक्षित रख लिया था, जिस पर अब 8 अप्रैल 2021 को निर्णय आया है और मंदिर पक्ष के आवेदन को स्वीकार कर न्यायालय ने सर्वेक्षण का आदेश दिया है।

वाराणसी के सिविल जज आशुतोष तिवारी ने आदेश दिया था कि पुरातात्विक विभाग की एक पांच सदस्यीय टीम ज्ञानवापी मस्जिद का सर्वेक्षण कर अपनी रिपोर्ट कोर्ट को दे। और जांच में जीपीआर अथवा जिओ रेडियोलॉजी सिस्टम अथवा दोनों का प्रयोग कर सर्वे करे। ये पूरा ज्ञानवापी इलाका एक बीघा, नौ बिस्वा और छह धूर में फैला है। मान्यता के मुताबिक, खुद भगवान विश्वेश्वर ने यहां अपने त्रिशूल से गड्ढा खोद कर एक कुआं बनाया था जो आज भी मौजूद है। ज्ञानवापी परिसर में चार मंडप है। यहां पर धर्म का अध्ययन किया जाता था।

न्यायालय में ज्ञानवापी को लेकर हिन्दू पक्ष का कथन है कि विवादित ढांचे के फर्श के नीचे 100 फीट ऊंचा आदि विश्वेश्वर का स्वयम्भू ज्योतिर्लिंग स्थापित है। यही नहीं विवादित ढांचे के दीवारों पर देवी देवताओं के चित्र भी प्रदर्शित है। भूतल में तहखाना और

विवादित ढांचे के दीवारों पर देवी देवताओं के चित्र भी प्रदर्शित है। भूतल में तहखाना और मस्जिद के गुम्बद के पीछे प्राचीन मंदिर की दीवार है, जिसे आज भी साफ तरीके से देखा जा सकता है। ज्ञानवापी मस्जिद के बाहर विशालकाय नंदी हैं, जिसका मुख मस्जिद की ओर है।

मस्जिद के गुम्बद के पीछे प्राचीन मंदिर की दीवार है, जिसे आज भी साफ तरीके से देखा जा सकता है। ज्ञानवापी मस्जिद के बाहर विशालकाय नंदी हैं, जिसका मुख मस्जिद की ओर है। इसके अलावा मस्जिद की दीवारों पर नक्काशियों से देवी देवताओं के चित्र उकेरे गए हैं। स्कंद पुराण में भी इन बातों का वर्णन है।

याचिका में कहा गया था कि 'मंदिर की भूमि' को हिंदू समुदाय के हवाले किया जाए, और ये भी कहा गया कि उपासना स्थल (विशेष उपबंध) अधिनियम, 1991, इस पर लागू नहीं होता, क्योंकि मस्जिद का निर्माण मंदिर के अवशेषों के ऊपर किया गया था, अतः उसके कुछ हिस्से अभी तक मौजूद हैं।

ज्ञानवापी मस्जिद के निर्माण के बारे में वाराणसी स्थित काशी विद्यापीठ में इतिहास विभाग में प्रोफेसर रह चुके डॉ. राजीव चतुर्वेदी कहते हैं कि, 'मस्जिद निर्माण का कोई दस्तावेज प्रमाण नहीं है। और मस्जिद का नाम ज्ञानवापी हो भी नहीं सकता। ऐसा लगता है कि ज्ञानवापी कोई ज्ञान की पाठशाला रही होगी। पाठशाला के साथ मंदिर भी रहा होगा जो प्राचीन गुरुकुल परंपराओं में हमेशा हुआ करता था। उस मंदिर को तोड़कर मस्जिद बनी तो उसका नाम ज्ञानवापी पड़ गया, ऐसा माना जा सकता है।' पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के पूर्व अपर महानिदेशक डॉ. बी. आर. मणि भी बताते हैं कि, 'साल 1937 में वाराणसी जिला अदालत का जो फैसला आया था, उसमें एक जगह जज ने कहा है कि ज्ञान कूप के उत्तर में ही भगवान विश्वनाथ का मंदिर है, क्योंकि कोई दूसरा ज्ञानवापी कूप बनारस में नहीं है। जज ने यह भी लिखा है कि एक विश्वनाथ मंदिर है और वो ज्ञानवापी परिसर के अंदर ही है। इसी मुकदमे की सुनवाई के दौरान ही बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के प्राचीन इतिहास के प्रोफेसर ए. एस. आल्टेकर का बयान दर्ज किया गया था, जिसमें उन्होंने स्कंद पुराण समेत कई प्राचीन ग्रंथों का हवाला देते हुए बताया था कि ज्ञानवापी कूप के उत्तर में ही भगवान विश्वनाथ का ज्योतिर्लिंग है।' काशी विश्वनाथ को 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक माना जाता है। यहाँ पर एक विचारणीय प्रश्न और भी है कि क्या जबरन तोड़ी गयी या बलपूर्वक छीनी गयी कोई सम्पत्ति वैध हो सकती है, क्या लूट की सामग्री से निर्मित भवन को वैध माना जा सकता है? जहाँ पर ज्ञानवापी मस्जिद स्थित है वह क्षेत्र काशी विश्वनाथ मंदिर का क्षेत्र है। इस प्रकार यदि कुरान के दृष्टिकोण से देखा जाये तो भी यह उचित नहीं है।

ISSN No. 2581-3528

परीक्षा में वरदान है सकारात्मक दृष्टिकोण

डॉ. शिवा शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर अंग्रेजी विभाग
झमन लाल पीजी कॉलेज, हसनपुर, अमरोहा

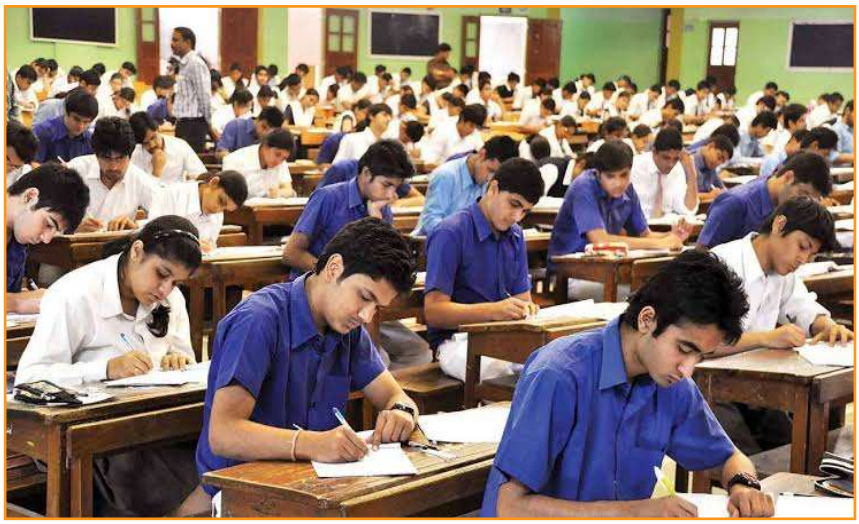

बोर्ड परीक्षा के दौरान स्मार्ट और सही तरीके से सिलेबस को याद किया जाए तो परीक्षा को मैनेज करना काफी आसान हो जाता है। परीक्षा चाहे कोई भी हो, विद्यार्थी अगर सकारात्मक सोच के साथ तैयारी करें, तो सफलता अवश्य मिलेगी। सकारात्मक सोच के लिए किसी खास अवसर की जरूरत नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों को हर परिस्थिति में सकारात्मक विचारों के साथ आगे बढ़ना चाहिए।

बोर्ड परीक्षा शूरू हो चुकी है। सभी छात्रों का फोकस पढ़ाई पर है। ऐसे में परीक्षा में सफल होने के लिए केवल सिलेबस पूरा करना ही सब कुछ नहीं होता, बल्कि स्मार्ट स्टडी किस तरह की जाए और पढ़ाई करने का फ्रूटफुल तरीका क्या है, यह जानना बहुत जरूरी है। सीबीएसई कक्षा 10 की बोर्ड परीक्षा 15 फरवरी से ही शुरू होकर 2 अप्रैल को समाप्त होगी। कक्षा 10 और 12 के लिए, यूपी बोर्ड परीक्षा, 22 फरवरी, 2024 को शुरू होकर 09 मार्च, 2024 तक जारी रहेगी। बोर्ड परीक्षा एक छात्र के स्कूली करियर में सबसे अहम होती है। कक्षा 8वीं के बाद से छात्रों का फोकस बोर्ड परीक्षा में अच्छे नंबर लाने की तरफ रहता है। परीक्षा नजदीक आने पर सभी छात्र दिन–रात एक करके सिलेबस पूरा करने और रिवीजन में अपना समय देते हैं। और खेलना–कूदना छोड़कर सभी परीक्षा की तैयारी में लग जाते हैं, लेकिन तैयारी करने का भी एक तरीका होता है। अगर स्मार्ट और सही तरीके से सिलेबस को याद किया जाए तो परीक्षा को मैनेज करना थोड़ा आसान हो जाता है। परीक्षा चाहे कोई भी हो, विद्यार्थी अगर सकारात्मक सोच के साथ बोर्ड परीक्षाओं की तैयारी करें, तो सफलता अवश्य मिलेगी। सकारात्मक सोच के लिए किसी खास अवसर की जरूरत नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों को हर परिस्थिति में सकारात्मक विचारों के साथ आगे बढ़ना चाहिए।

पॉजिटिव सोच एक प्रकार की शक्ति है, जो हमें भगवान द्वारा मिली है। इस शक्ति का प्रयोग करके हम जीवन में बड़े से बड़े युद्ध में विजय प्राप्त कर सकते हैं। motivation quotes भी पॉजिटिव थिंकिंग लाते हैं। पॉजिटिव थिंकिंग से हम परेशानी का सामना डट कर करते हैं। हर एक मनुष्य के जीवन में परेशानी होती है, जो मनुष्य परेशानी के समय में अपनी सोच को काबू में रखते हैं, अंतिम समय में वही सफल हो पाते हैं। पॉजिटिव सोच लाने के लिए मूल मंत्र हैं– विश्वास रखें खुशी एक प्रकार का विकल्प है अपने लिए चुन सकते हैं। हमेशा नकारात्मक भरी जिंदगी से दूर रहें। हर परिस्थिति और मुश्किल में सकारात्मक सोचें। हमेशा खुशियां दूसरों के साथ बांटें। सकारात्मक सोच वाले लोगों से जुड़ कर रहें।

किसी भी परीक्षा के लिए तैयार रहने के लिए यथार्थवादी उद्देश्यों के साथ एक अध्ययन योजना बनाना और उस पर कायम रहना आवश्यक है। प्रश्नों का अभ्यास करने और सामग्री को समझने से निश्चित रूप से मदद मिलेगी। व्यवस्थित रहना, पर्याप्त नींद लेना,

ISSN No. 2581-3528

स्वस्थ भोजन करना और ज़रूरत पड़ने पर ब्रेक लेना, आपको प्रेरित और आत्मविश्वासी बनाए रखेगा। तुलना से बचना, खुद पर विश्वास करना और अपनी ताकत का उपयोग करना आपके आत्मविश्वास में सुधार करेगा। सही मानसिकता और संपूर्ण तैयारी के साथ, आप किसी भी परीक्षा में आसानी से सफल हो सकते हैं। परीक्षा में सफलता प्राप्त करने के लिए आत्मविश्वास बढ़ाने और प्रदर्शन में सुधार करने के लिए सकारात्मक परीक्षा मानसिकता विकसित करना महत्वपूर्ण है। इसलिए यह सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है कि आप आगे के कार्य के लिए मानसिक रूप से तैयार रहें। परीक्षा से एक रात पहले सकारात्मक कल्पना – सफल प्रदर्शन की कल्पना करने से आत्मविश्वास बढ़ता है।

सकारात्मक रणनीति : सकारात्मक अनुभव की कल्पना करने में समय बिताने से छात्रों को घबराहट से निपटने में भी मदद मिलेगी। तस्वीरें शब्दों से बेहतर हैं। यह पाया गया है कि अपने आप को अच्छा करते हुए चित्रित करना मूड को बेहतर बनाने और चिंता को कम करने में खुद को यह बताने की तुलना में अधिक प्रभावी है कि आप अच्छा करेंगे। यह ध्यान देने योग्य है कि आपकी भविष्य की सफलता के बारे में दिवास्वप्न देखने के कुछ संभावित नुकसान हैं, लेकिन ये लंबे समय तक व्यवहार और आत्म–नियंत्रण रणनीतियों से संबंधित हैं। परीक्षा से पहले शाम को कुछ मिनटों के लिए सकारात्मक सोचने से (और एक बार जब आप कड़ी मेहनत कर लेते हैं) इस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ना चाहिए, और यह लंबे समय में आपके मूड को बेहतर बनाने में मदद करेगा। अपने पिछले सर्वोत्तम को याद रखें। पिछले सकारात्मक अनुभवों के बारे में सोचने से आत्मविश्वास में सुधार करने में मदद मिलेगी। छात्रों को आगामी परीक्षा के बारे में अधिक आत्मविश्वास महसूस करने में मदद करने के लिए खुद को एक सफल परीक्षा की याद दिलानी चाहिए। उन्हें इस बारे में सोचना चाहिए कि पिछली परीक्षा में उन्हें अच्छा प्रदर्शन करने में किस बिंदुने मदद की और अब वे इसे कैसे लागू कर सकते हैं। यह एक मेटाकॉग्निशन अभ्यास है जो पूरे वर्ष विकसित करने के लिए एक अच्छा कौशल भी है। खुद को अपनी तैयारी की याद दिलाएं – आपने किसी कार्य के लिए कितनी अच्छी तैयारी की है, यह आत्मविश्वास का एक महत्वपूर्ण स्रोत है। आत्मविश्वास के नियंत्रणीय स्रोत, जैसे तैयारी, आत्मविश्वास के अधिक स्थायी स्तर को जन्म देंगे। छात्रों को अपने द्वारा की गई तैयारी की याद दिलाने से परीक्षा की तैयारी में आत्मविश्वास और नियंत्रण की भावना बढ़ेगी। खुद पर ध्यान दें और दूसरों से तुलना न करें – जब छात्र अपनी तुलना दूसरों से करते हैं, तो उनका आत्मविश्वास उनके आसपास के लोगों पर निर्भर होता है, और उनके नियंत्रण में नहीं होता है। यह तनावपूर्ण है और असफलता का डर बढ़ाता है। वैकल्पिक रूप से, खुद पर और वे क्या नियंत्रित कर सकते हैं उस पर ध्यान केंद्रित करने से आत्मविश्वास बढ़ेगा। खुद को यह याद दिलाने से कि वे क्या कर सकते हैं, उन्हें प्रदर्शन करने की अपनी क्षमता में अधिक आत्मविश्वास महसूस करने में मदद मिलेगी। अपने असफलताओं पर काबू पाने के क्रम में ओलंपिक चैंपियनों के मानसिक लचीलेपन पर शोध से पता चला है कि कैसे असफलताओं पर काबू पाने से उन्हें भविष्य की चुनौतियों से निपटने में मदद मिली है। छात्रों को पिछली असफलताओं के बारे में सोचने के लिए प्रोत्साहित करें जो उन्हें झेलनी पड़ीं और उनसे उबरने में उन्हें क्या मदद मिली।

बोर्ड परीक्षा को त्यौहार की तरह सेलिब्रेट करें। ऐसा करने से परीक्षा का तनाव कम होगा और तैयारी अच्छी होगी। परीक्षा अपनी क्षमता दिखाने का तरीका है। इसलिए घबराए और भयभीत न हों। सकारात्मक रहें और अपना सर्वश्रेष्ठ दें। अपने दोस्तों से अपनी तुलना मत करें।

परीक्षा को चुनौती के रूप में देखें : अगर किसी चीज को खतरे के रूप में देखा जाता है, तो इससे तनाव पैदा होने की संभावना अधिक होती है। जो एथलीट किसी घटना को खतरे के बजाय एक चुनौती के रूप में देखते हैं, उनका प्रदर्शन बढ़ता है। किसी असफल परीक्षा के संभावित नकारात्मक परिणाम के बारे में सोचने के बजाय, उन्हें परीक्षा को सफल होने के अवसर के रूप में देखना चाहिए। अगर यह गलत हो गया तो क्या होगा इस पर ध्यान केंद्रित करने से होने वाले तनाव में वृद्धि से परीक्षा से एक रात पहले उनकी नींद की गुणवत्ता में भी बाधा आएगी।

अच्छी नींद लें : नींद की अवधि और गुणवत्ता का परीक्षा प्रदर्शन से जुड़े कई कारकों पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। रात में अच्छी नींद लेने से छात्रों को उनकी याददाश्त और एकाग्रता में सुधार करने में मदद मिलेगी। यदि कोई छात्र परीक्षा से पहले सो नहीं पाता है, तो इसका मूड पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है, साथ ही नकारात्मक विचारों पर अधिक ध्यान केंद्रित हो सकता है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बताया कि बोर्ड परीक्षा को त्यौहार की तरह सेलिब्रेट करें। ऐसा करने से परीक्षा का तनाव कम होगा और तैयारी अच्छी होगी। परीक्षा अपनी क्षमता दिखाने का तरीका है। इसलिए घबराए और भयभीत न हों। सकारात्मक रहें और अपना सर्वश्रेष्ठ दें। अपने दोस्तों से अपनी तुलना मत करें।

ISSN No. 2581-3528

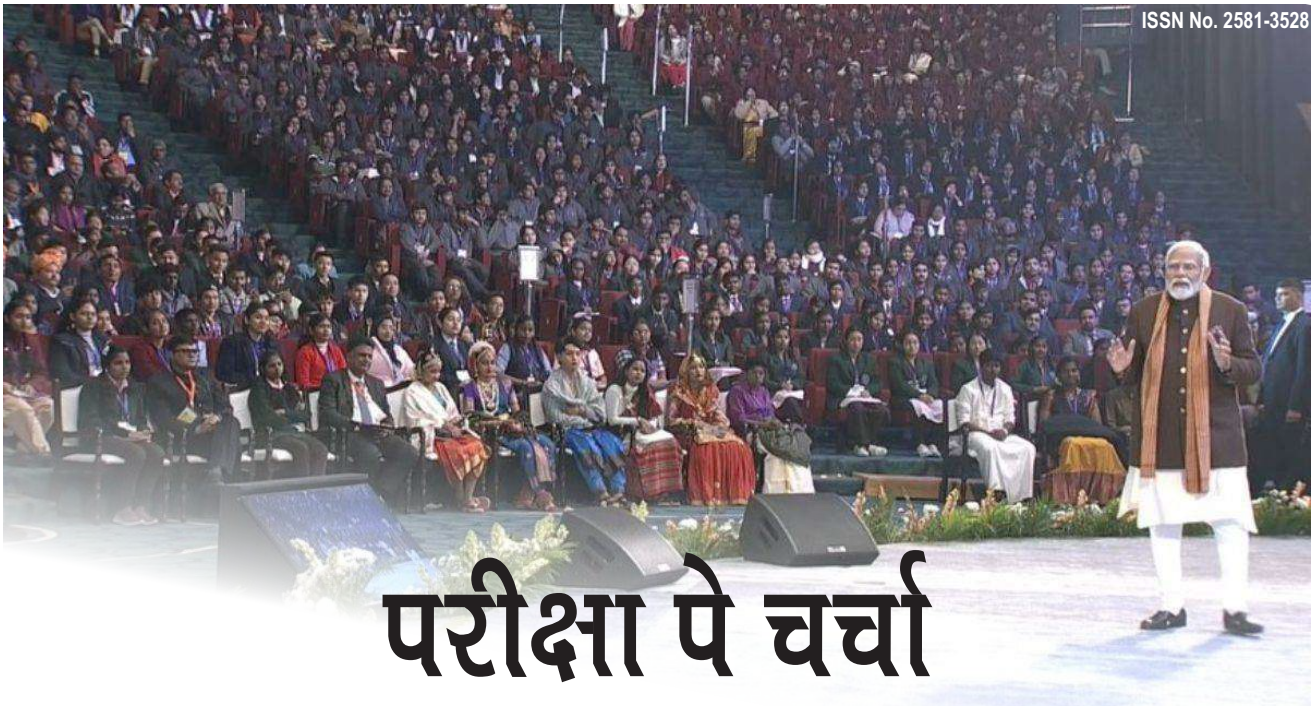

परीक्षा पे चर्चा

लिखने की आदत बनाएं - प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी

डॉ. रामशंकर
सहायक प्राध्यापक,जनसंचार एवं पत्रकारिता विभाग
आईआईएमटी कॉलेज ऑफ मैनेजमेंट, गौतम बुद्ध नगर

'मन की बात' प्रधानमंत्री मोदी का एक मासिक रेडियो कार्यक्रम है, जिसमें वे देशवासियों से सीधे बातचीत करते हैं। इस कार्यक्रम में वे विभिन्न विषयों पर अपनी बात रखते हैं, जैसे - राष्ट्रीय महत्व के मुद्दे, शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, अर्थव्यवस्था, विदेश नीति, सामाजिक मुद्दे, महिला सशक्तिकरण, भेदभाव, पर्यावरण, जल संरक्षण, वृक्षारोपण, जलवायु परिवर्तन, रोजगार, शिक्षा, कौशल विकास, परीक्षा पे चर्चा आदि। प्रत्येक वर्ष की भांति प्रधानमंत्री ने विद्यार्थियों से परीक्षा पे चर्चा की तथा उनसे जुड़े समाधान से पूरे देश के विद्यार्थियों, शिक्षकों और अभिभावकों को लाभान्वित किया।

'मन की बात' स्व से समष्टि की यात्रा है। 'मन की बात' अहम् से वयम् की यात्रा है। यह तो 'मैं नहीं तू ही' इसकी संस्कार साधना है। मेरे लिए 'मन की बात' ये एक कार्यक्रम नहीं है, मेरे लिए एक आस्था, पूजा, व्रत है। 'मन की बात' मेरे मन की आध्यात्मिक यात्रा है। पीपीसी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के प्रयासों से शुरू की गई एक गतिविधि है जो छात्रों, अभिभावकों, शिक्षकों और समाज को एकजुट कर एक ऐसे वातावरण को बढ़ावा देती है, जहां प्रत्येक बच्चे की अद्वितीय व्यक्तित्व की सराहना की जा सके। उसे प्रोत्साहित किया जाए और खुद को पूरी तरह से व्यक्त करने की अनुमति दी जाए।

'मन की बात' कार्यक्रम का उद्देश्य

- देशवासियों के साथ सीधा संवाद स्थापित करना।
- महत्वपूर्ण मुद्दों पर जागरूकता बढ़ाना।
- सरकार की योजनाओं और नीतियों के बारे में जानकारी देना।
- देशवासियों को प्रेरित करना।

'मन की बात' कार्यक्रम की शुरुआत 3 अक्टूबर 2014 को हुई थी। यह कार्यक्रम हर महीने के अंतिम रविवार को प्रसारित किया जाता है। इसे ऑल इंडिया रेडियो (एआईआर), दूरदर्शन (डीडी) और प्रधानमंत्री मोदी की वेबसाइट और सोशल मीडिया अकाउंट पर सुना और देखा जाता है। यह कार्यक्रम देशवासियों के बीच काफी

ISSN No. 2581-3528

लोकप्रिय है। यह उन्हें राष्ट्रीय और सामाजिक मुद्दों पर जानकारी और प्रेरणा प्रदान करता है। कोविड 19 महामारी के दौर में परीक्षा पे चर्चा का चौथा संस्करण ऑनलाइन रहा, लेकिन पांचवां और छठा संस्करण टाउन–हॉल प्रारूप में आयोजित किया गया। 2023 के संस्करण में कुल 31.24 लाख छात्रों, 5. 60 लाख शिक्षकों और 1.95 लाख अभिभावकों ने भाग लिया था। इस वर्ष, MyGov पोर्टल पर अनुमानित 2.26 करोड़ पंजीकरण हुए हैं, जो छात्रों के बीच व्यापक उत्साह को दर्शाता है।

छात्रों पर अतिरिक्त दबाव डालने वाली सांस्कृतिक और सामाजिक अपेक्षाओं जैसे बाहरी कारकों के समाधान के मुद्दे से प्रधानमंत्री और विद्यार्थियों के बीच प्रश्न और समाधान का सिलसिला शुरू हुआ। मन की बात परीक्षा पे चर्चा में सांस्कृतिक और सामाजिक अपेक्षाओं से संबंधित प्रश्न हमेशा पूछे गए हैं। उन्होंने खुद को दबाव से निपटने में सक्षम बनाने और जीवन के एक हिस्से के रूप में इसके लिए तैयारी करने का सुझाव दिया। छात्रों से एक अप्रत्याशित, असामान्य मौसम से दूसरे ऐसे अप्रत्याशित मौसम तक यात्रा करने का उदाहरण देकर उनसे स्वयं को असामान्य मौसम का मुकाबला करने के लिए मानसिक रूप से तैयार करने का आग्रह किया। आशय यह है कि तनाव के स्तर का आकलन करने और इसे धीरे–धीरे बढ़ाकर आगे बढ़ने का भी सुझाव दिया।

प्रतिस्पर्धा स्वस्थ होनी चाहिए। अक्सर अस्वस्थ प्रतिस्पर्धा के बीज परिवारों में बोए जाते हैं, जिससे भाई–बहनों के बीच विकृत प्रतिस्पर्धा पैदा होती है। जहां बच्चे स्वस्थ तरीके से प्रतिस्पर्धा करते हुए एक–दूसरे की मदद करने को प्राथमिकता देते हैं। परीक्षा में

एक विद्यार्थी के नाते हमें ये सोचना चाहिए कि क्या आप जो कहते हैं उसका सच में पालन करते हैं या नहीं। ईमानदार संवाद विश्वास की कमी की संभावना को कम कर सकता है। विद्यार्थियों को अपने व्यवहार में सच्चा एवं ईमानदार रहना चाहिए।

अच्छा प्रदर्शन करना कोई शून्य–संचय का खेल नहीं है। यह प्रवृत्ति उन लोगों से मित्रता करने की प्रवृत्ति को जन्म दे सकती है जो प्रेरक मित्र नहीं होंगे। अर्थात स्वयं से स्पर्धा जैसे गुणों को आत्मसात करना चाहिए। उससे द्वेष करने की जरूरत नहीं है। असल में वो आपके लिए प्रेरणा बन सकता है, अगर यही मानसिकता रही, तो आप अपने से तेज तर्रार व्यक्ति को दोस्त ही नहीं बनाएंगे। पहले दिन से लेकर परीक्षा के समय तक छात्र और शिक्षक के बीच जुड़ाव को धीरे–धीरे बढ़ाने पर जोर दिया और कहा कि इससे परीक्षा के दौरान तनाव पूरी तरह खत्म हो परिवारों के साथ व्यक्तिगत जुड़ाव विकसित करने और छात्र की उपलब्धियों की परिवार के सामने सराहना की बात भी हो। शिक्षक नौकरी की भूमिका में नहीं हैं, बल्कि वे छात्रों के जीवन को संवारने की जिम्मेदारी निभाते हैं। इसलिए शिक्षक और छात्रों के बीच हमेशा सकारात्मक रिश्ता रहना चाहिए।

परीक्षा के अंतिम क्षण तक तैयारी न करने और शांत मानसिकता के साथ परीक्षा देने और किसी भी बाहरी विध्वंस से बचने के लिए कहा, जो अवांछित तनाव का कारण बन सकता है। अधिकांश परीक्षाएं अभी भी लिखित होती हैं और कंप्यूटर और फोन के कारण लिखने की आदत कम हो रही है। लेकिन लिखने की आदत बनाए रखनी चाहिए। दिन में जितनी देर पढ़ते हैं उसका कम से कम आधा वक्त नोट्स बनाने में लगाएं। इससे आपको आइडिया लग जाएगा कि परीक्षा में कितनी देर में क्या आंसर लिखना है। इससे टाइम मैनेजमेंट आ जाएगा और जाहिर तौर पर परीक्षा परिणाम में इसका असर दिखेगा।

स्वस्थ शरीर स्वस्थ दिमाग के लिए महत्वपूर्ण है। स्वस्थ रहने के लिए कुछ दिनचर्या की आवश्यकता होती है और धूप में समय बिताने तथा नियमित और पूरी नींद लेना चाहिए। स्क्रीन टाइम जैसी आदतें आवश्यक नींद को ख़त्म

ISSN No. 2581-3528

कर रही हैं जिसे आधुनिक स्वास्थ्य विज्ञान बहुत महत्वपूर्ण मानता है। प्रधानमंत्री ने अपनी जीवन चर्या के बारे बताया कि वे अपने निजी जीवन में भी बिस्तर पर जाने के 30 सेकंड के भीतर गहरी नींद में जाने की व्यवस्था बना रखी है। जागते समय पूरी तरह जागना और सोते समय गहरी नींद, एक संतुलन है जिसे हासिल किया जा सकता है। स्वस्थ रहना सबसे जरूरी है। अगर हम स्वस्थ नहीं रहेंगे, तो परीक्षा में बैठने की सामर्थ्य नहीं होगी। रील्स पर समय बर्बादी से नींद को कम आंक रहे हैं।

अगर हमारे पास क्षमता है, तो हम कुछ भी कर सकते हैं। भ्रम को खत्म करने के लिए हमें निर्णायक होना चाहिए, जहां किसी को यह तय करना होता है कि क्या खाना है। उन्होंने लेने वाले निर्णयों की सकारात्मकता और नकारात्मकता का मूल्यांकन करने का भी सुझाव दिया। सोचने का विषय है कि पारिवारिक माहौल में माता–पिता या टीचर भरोसा नहीं कर पा रहे। कहीं न कहीं हमें अपने आचरण का एनालिसिस करने की जरूरत है। एक विद्यार्थी के नाते हमें ये सोचना चाहिए कि क्या आप जो कहते हैं उसका सच में पालन करते हैं या नहीं।

ईमानदार संवाद विश्वास की कमी की संभावना को कम कर सकता है। विद्यार्थियों को अपने व्यवहार में सच्चा एवं ईमानदार रहना चाहिए। इसी तरह माता–पिता को भी अपने बच्चों पर संदेह की बजाय विश्वास करना चाहिए।

जो सलाह आपको सबसे सरल लगती है उसी से आप समन्वय बैठा लेते हैं। सबसे बुरी जो स्थिति है वह कन्फ्यूजन है। निर्णय करने से पहले हमें सारी चीजों को जितने तराजू पर तोल सकते हैं, तोलना चाहिए। निजता और गोपनीयता के विषय की ओर इशारा करते हुए कहा, 'प्रत्येक माता–पिता को इस मुद्दे का सामना करना पड़ता है'। उन्होंने परिवार में नियमों और विनियमों का एक सेट बनाने पर जोर दिया और रात के खाने के दौरान कोई इलेक्ट्रॉनिक गैजेट न रखने और घर में नो गैजेट जोन बनाने का उल्लेख किया। हम पेट भरने के बाद अपना मनपसंद खाना नहीं खा सकते हैं ठीक वैसे ही कितनी भी प्रिय चीज क्यों न आ रही हो, लेकिन मोबाइल की समय सीमा तय करनी पड़ेगी।

ईमानदार संवाद विश्वास की कमी की संभावना को कम कर सकता है। विद्यार्थियों को अपने व्यवहार में सच्चा एवं ईमानदार रहना चाहिए। इसी तरह माता-पिता को भी अपने बच्चों पर संदेह की बजाय विश्वास करना चाहिए।

आधुनिक हेल्थ साइंस भी नींद के महत्व पर जोर देती है। आप नींद आवश्यक लेते हैं या नहीं, यह आपके स्वास्थ्य पर ध्यान देता है। जिस उम्र में हैं, उसमें जिन चीजों की जरूरत है वो आहार में है या नहीं यह जानना जरूरी है। हमारे आहार में सुतंलन स्वास्थ्य के लिए जरूरी है, फिटनेस के लिए एक्सरसाइज करना चाहिए, जैसे रोज टूथब्रश करते हैं वैसे ही नो कॉम्प्रोमाइज एक्सरसाइज करनी चाहिए। मैं हर चुनौती को चुनौती देता हूं। मैं चुनौती के निकलने का निष्क्रिय रूप से इंतजार नहीं करता। इसके कारण मुझे हर समय कुछ नया सीखने का मौका मिलता है। 'नई परिस्थितियों से निपटना मुझे समृद्ध बनाता है। जब कोई निजी स्वार्थ नहीं होता, तो निर्णय लेने में कोई दुविधा नहीं होती। ये मेरी सबसे बड़ी ताकत है। मैं जो करूंगा, देश के लिए करूंगा।

निष्कर्ष :

इस वर्ष परीक्षा पे चर्चा का सातवां संस्करण 29 जनवरी 2024 को 'भारत मंडपम, नई दिल्ली' में आयोजित हुआ। इस कार्यक्रम में पीएम नरेंद्र मोदी ने छात्र–छात्राओं के साथ–साथ शिक्षक और अभिभावकों से भी चर्चा की। परीक्षा पे चर्चा के दौरान प्रधानमंत्री के संबोधन को बच्चों ने बड़े ही ध्यान से सुना। उन्होंने कहा कि किसी भी परीक्षा से पहले खुद को जानना बहुत जरूरी है। करीब पौने दो घंटे तक पीएम की मेगा क्लास में बच्चों को परीक्षा में बेहतर प्रदर्शन से लेकर बेहतर नागरिक बनने के गुर मिले। पीएम ने बच्चों के साथ–साथ उनके माता–पिता और शिक्षकों से भी बात की। प्रधानमंत्री ने बेहद सरल और मजेदार अंदाज में बच्चों के हर एक सवाल का जवाब दिया कि कैसे बोर्ड परीक्षा की तैयारी की जाए। टाइम मैनेजमेंट कैसे हो? मोबाइल के दुष्प्रभाव से कैसे बचा जाए?

सन्दर्भ

- एएनआई भाषा. (2024, फरवरी 11)। परीक्षाओं को लेकर तनाव में न आएं छात्र, मन की बात में बोले PM मोदी।
- दैनिक जागरण. (2024, फरवरी 11)। परीक्षाओं से डरें नहीं, तैयारी करें– पीएम मोदी।
- मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार. (n.d.)। परीक्षा पे चर्चा।
- भारत सरकार प्रेस सूचना ब्यूरो. प्रधानमंत्री ने 'मन की बात' कार्यक्रम में छात्रों से परीक्षाओं से जुड़ी चिंताओं पर बातचीत की। प्रेस विज्ञप्ति, https://pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=1895020

चंद्रशेखर आजाद, जो सदा आजाद रहे

भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के सेनानियों में चन्द्रशेखर आजाद का नाम सदा अग्रणी रहेगा। उनका जन्म 23 जुलाई, 1906 को ग्राम भाबरा (झाबुआ, मध्य प्रदेश) में हुआ था। उनके पूर्वज गाँव बदरका (जिला उन्नाव, उत्तर प्रदेश) के निवासी थे। पर अकाल के कारण इनके पिता श्री सीताराम तिवारी भाबरा में आकर बस गये थे। बचपन से ही चन्द्रशेखर का मन अंग्रेजों के अत्याचार देखकर सुलगता रहता था। किशोरावस्था में वे भागकर अपनी बुआ के पास बनारस आ गये और संस्कृत विद्यापीठ में पढ़ने लगे।

बनारस में ही वे पहली बार विदेशी सामान बेचने वाली एक दुकान के सामने धरना देते हुए पकड़े गये। थाने में हुई पूछताछ में उन्होंने अपना नाम आजाद, पिता का नाम स्वतन्त्रता और घर का पता जेलखाना बताया। इस पर बौखलाकर थानेदार ने इन्हें 15 बेंतों की सजा दी। हर बेंत पर ये 'भारत माता की जय' बोलते थे। तब से ही इनका नाम 'आजाद' प्रचलित हो गया। आगे चलकर आजाद ने सशस्त्र क्रान्ति के माध्यम से देश को आजाद कराने वाले युवकों का एक दल बना लिया। भगतसिंह, सुखदेव, राजगुरु, बिस्मिल, अशफाक, मन्मथनाथ गुप्त, शचीन्द्रनाथ सान्याल, जयदेव आदि उनके सहयोगी थे।

आजाद तथा उनके सहयोगियों ने नौ अगस्त, 1925 को लखनऊ से सहारनपुर जाने वाली रेल को काकोरी स्टेशन के पास रोककर सरकारी खजाना लूट लिया। यह अंग्रेज शासन को खुली चुनौती थी, अत: सरकार ने क्रान्तिकारियों को पकड़ने में पूरी ताकत झोंक दी। पर आजाद को पकड़ना इतना आसान नहीं था। वे वेष बदलकर क्रान्तिकारियों के संगठन में लगे रहे। ग्वालियर में रहकर इन्होंने गाड़ी चलाना और उसकी मरम्मत करना भी सीखा। 17 दिसम्बर, 1928 को इनकी प्रेरणा से ही भगतसिंह, सुखदेव, राजगुरु आदि ने लाहौर में पुलिस अधीक्षक कार्यालय के ठीक सामने सांडर्स को यमलोक पहुँचा दिया। अब तो पुलिस बौखला गयी। पर क्रान्तिवीर अपने काम में लगे रहे।

कुछ समय बाद क्रान्तिकारियों ने लाहौर विधानभवन में बम फेंका। यद्यपि उसका उद्देश्य किसी को नुकसान पहुँचाना नहीं था। बम फेंककर भगतसिंह तथा बटुकेश्वर दत्त ने आत्मसमर्पण कर दिया। उनके वीरतापूर्ण वक्तव्यों से जनता में क्रान्तिकारियों के प्रति फैलाये जा रहे भ्रम दूर हुए। दूसरी ओर अनेक क्रान्तिकारी पकड़े भी गये। उनमें से कुछ पुलिस के अत्याचार न सह पाये और मुखबिरी कर बैठे। इससे क्रान्तिकारी आन्दोलन कमजोर पड़ गया।

वह 27 फरवरी, 1931 का दिन था। पुलिस को किसी मुखबिर से समाचार मिला कि आज प्रयाग के अल्फ्रेड पार्क में चन्द्रशेखर आजाद किसी से मिलने वाले हैं। पुलिस ने समय गँवाये बिना पार्क को घेर लिया। आजाद एक पेड़ के नीचे बैठकर अपने साथी की प्रतीक्षा कर रहे थे। जैसे ही उनकी निगाह पुलिस पर पड़ी, वे पिस्तौल निकालकर पेड़ के पीछे छिप गये। कुछ ही देर में दोनों ओर से गोली चलने लगी। इधर चन्द्रशेखर आजाद अकेले थे और उधर कई जवान। जब आजाद की पिस्तौल में एक गोली रह गयी, तो उन्होंने देश की मिट्टी अपने माथे से लगायी और उस अन्तिम गोली को अपनी कनपटी में मार लिया। उनका संकल्प था कि वे आजाद ही जन्मे हैं और मरते दम तक आजाद ही रहेंगे। उन्होंने इस प्रकार अपना संकल्प निभाया और जीते जी पुलिस के हाथ नहीं आये।